: श्री :

चमत्कार–चिन्तामणिः

सान्वय-भाषाटीकासहिताः

संशोधनकर्त्ता :

पं० रामबिहारी मिश्र, नव्य–व्याकरणशास्त्री

मानिकपुर, शंकूधारा, वाराणसी

प्रकाशक :

ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–१

सन् १९८३]

[मूल्य २ रु०

श्रीः

* चमत्कार-चिन्तामणिः *

सान्वय-भाषाटीकासहिताः

संशोधनकर्त्ता—

पं० रामबिहारी मिश्र, नव्य-व्याकरणशास्त्री

मानिकपुर, शंकूधारा, वाराणसी

प्रकाशक—

ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

सन् १९८२]   [मूल्य २)

श्रीगणेशाय नमः

चमत्कार-चिन्तामणिः

सान्वय-भाषाटीका-सहितः

लसत्पीतपट्वाम्बरं कृष्णचन्द्रं
मुदा राधयाऽऽलिङ्गितं विद्युतेव ।
घनं सम्प्रणम्यात्र नारायणाख्यं
चमत्कारचिन्तामणिं सम्प्रवक्ष्ये ॥ १ ॥

अन्वयः—अत्र विद्युता आलिङ्गितं घनमिव राधया आलिङ्गितं लसत्पीतपट्वाम्बरं, कृष्णचन्द्रं नारायणाख्यं सम्प्रणम्य चमत्कार-चिंतामणिं सम्प्रवक्ष्ये ॥ १ ॥

अर्थः—मैं पीताम्बर धारण किये हुए, दामिनीयुक्त मेघ के समान श्री राधिका द्वारा आलिङ्गित श्रीकृष्ण को प्रणाम करके चमत्कार-चिन्तामणि नामक ग्रन्थ को कहता हूँ ॥ १ ॥

अथ सूर्यफलम्

तनुस्थो रविस्तुङ्गयष्टिं विधत्ते
मनः सन्तपेद्दारदायादवर्गात् ।
वपुः पीड्यते वातपित्तेन नित्यं
स वै पर्यटन् हासवृद्धिं प्रयाति ॥ २ ॥

अन्वयः—तनुस्थः रविः तुंगयष्टि विधत्ते, दारदायादवर्गात् मनः सन्तपेत्, वातपित्तेन नित्यं वपुः पीड्यते, वै सः नित्यं पर्यटन् ह्रासवृद्धि प्रयाति । २ ॥

अर्थः—जिस पुरुष के लग्न में रवि होता है उसका नाक, शरीर तथा ललाट ऊँचा होता है। स्त्री, पुत्र तथा कुटुम्बियों से उसका मन व्यथित रहता है। वायु एवं पित्त से उसका शरीर सदैव क्लशित रहता है। वह सदैव पर्यटन किया करता है। उसका धन सदैव एकसा नहीं रहता। उसमें कभी ह्रास तथा कभी वृद्धि हुआ करती है ॥ २ ॥

घने यस्य भानुः स भाग्याधिकः स्या-
च्चतुष्पात्सुखं सद्व्यये स्वं च याति ।
कुटुम्बे कलिर्जाययया जायतेऽपि
क्रिया निष्फला याति लाभस्य हेतोः ॥ ३ ॥

अन्वयः—यस्य धने भानुः स्यात्, सः भाग्याधिकः स्यात्, चतुष्पात्सुखं स्यात्, सद्व्यये च स्वं याति, कुटुम्बे जाययाऽपि कलिर्जायते, लाभस्य हेतोः क्रिया निष्फला याति ॥ ३ ॥

अर्थः—जिसके धन स्थान में सूर्य होता है वह अत्यन्त भाग्यवान् होता है। गाय, घोड़ा तथा हाथी इत्यादि चौपायों का पूर्णरूपेण सुख प्राप्त करता है। उसका धन उत्तम कार्यों में व्यय होता है। स्त्री के हेतु कुटुम्बियों से कलह होता है। लाभ के जितने भी उपाय वह करता है सभी व्यर्थ हो जाते हैं ॥ ३ ॥

तृतीये यदाऽहर्मणिर्जन्मकाले
प्रतापाधिकं विक्रमं चाऽतनोति ।

तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थचारी
सदारिक्षयः सङ्गरे शं नरेशात् ॥ ४ ॥

अन्वयः—जन्मकाले अहर्मणिः यदा तृतीये भवेत् तदा प्रतापाधिकं विक्रमं च आतनोति, सोदरैः तप्यते तीर्थचारी भवति संगरे सदा अरिक्षयः (स्यात्) नरेशात् शं (स्यात्) ॥ ४ ॥

अर्थः—जिसके जन्म लग्न से तीसरे स्थान में सूर्य हो तो वह बड़ा प्रतापी तथा पराक्रमी होता है। अपने सगे भाइयों से वह पीड़ित रहता है। वह तीर्थयात्रा करता है। युद्ध में सदैव शत्रुओं को पराजित करता है। राजा के द्वारा उसे सुख प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

तुरीये दिनेशेऽतिशोभाधिकारी
जनः संलभेद्विग्रहं बन्धुतोऽपि ।
प्रवासी विपक्षाहवे मानभङ्गं
कदाचिन्न शान्तं भवेत्तस्य चेतः ॥ ५ ॥

अन्वयः—दिनेशे तुरीये जनः अतिशोभाधिकारी (भवति) बन्धुतः अपि विग्रहं संलभेत्, प्रवासी (भवति), विपक्षाहवे मानभङ्गं (लभेत्), तस्य चेतः कदाचित् न शान्तं भवेत् ॥ ५ ॥

अर्थः—जिसके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में सूर्य होता है वह सदैव विदेशवासी होता है। युद्ध में शत्रु से अपमानित होता है। उसका अन्तःकरण कभी शान्त नहीं रहता ॥ ५ ॥

सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापी
कुशाग्रामतिर्भास्करे मन्त्रविद्या ।

रतिर्वञ्चने सञ्चकोऽपि प्रमादी
मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया ।। ६ ।।

अन्वयः—भास्करे सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापी (भवति), मतिः कुशाग्रा (भवति) मंत्रविद्या (भवेत्), वञ्चने रतिः (स्यात्) सः प्रमादी (भवति), सञ्चकः अपि (स्यात्) तस्य मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया ।। ६ ।।

अर्थः—जिसके पाँचवें स्थान में सूर्य होता है उसे ज्येष्ठ पुत्र के निधन का दुःख होता है। उसकी बुद्धि कुशाग्र होती है। वह प्रायः अन्य लोगों को प्रवञ्चित किया करता है। वह धन एकत्रित करने वाला होता है, तथा उसकी मृत्यु उदर-व्याधि से होती है ।।६।।

रिपुध्वंसकृद् भास्करो यस्य षष्ठे
तनोति व्ययं राजतो मित्रतो वा ।
कुले मातुरापच्चतुष्पादतो वा
प्रयाणे निषादैर्विषादं करोति ।। ७ ।।

अन्वयः—भास्करः यस्य षष्ठे (स्यात्) असौ रिपुध्वंसकृत् (भवति), राजतः वा मित्रतः व्ययं तनोति, मातृकुलात् चतुष्पादतः वा आपत् (भवति), प्रयाणे निषादैः विषादं करोति ।। ७ ।।

अर्थः—जन्म से छठे स्थान में, जिसके सूर्य हो, वह शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है। उसकी सम्पत्ति राजा अथवा मित्र के संबंध में व्यय होती है। माता के कुल से तथा चौपायों से पीड़ित होता है। यात्रा में भीलों के द्वारा वह पीड़ित होता है ।। ७ ।।

द्युनाथो यदा द्यूनजातो नरस्य
प्रियातापनं पिण्डपीडा च चिन्ता ।

भवेत्तुच्छलब्धः क्रये विक्रयेऽपि

प्रतिस्पर्धया नैति निद्रां कदाचित् ॥ ८ ॥

अन्वयः—यदा द्युनाथः द्यूनजातः (भवेत्) तदा नरस्य प्रियातापनं पिण्डपीडा च (भवेत्), क्रये विक्रये अपि तुच्छलब्धि भवेत्, कदाचित् प्रतिस्पर्धया निद्रां न एति ॥ ८ ॥

अर्थः—जिसके सातवें स्थान में सूर्य होता है उसे स्त्री का कष्ट होता है। शरीर पीड़ित रहता है। मन सदैव चिन्तित रहता है तथा व्यापार में कम लाभ होता है। द्वेष के कारण वह कभी सुख की नींद नहीं सो पाता ॥ ८ ॥

क्रियालम्पटं त्वष्टमे कष्टभाजं

विदेशीयदारान् भजेत् द्वाप्यवस्तु।

वसुक्षीणता दस्युतो वा विलम्बाद्-

विपद्गुह्यता भानुरुग्रं विधत्ते ॥ ९ ॥

अन्वयः—अष्टमे भानुः क्रियालम्पटं उग्रं कष्टभाजं च विधत्ते। विदेशीयदारान् अप्यवस्तु वापि भजेत् दस्युतः वसुक्षीणता (भवेत्), विलम्बात् विपद्गुह्यता (भवेत्) ॥ ९ ॥

अर्थः—जिसके आठवें स्थान में सूर्य होता है, वह कार्य करने में तत्पर होता है। सदैव कष्ट भोगता रहता है। उसका विदेशीय नारियों से सदैव सम्पर्क बना रहता है। तथा नशा आदि निकृष्ट पदार्थों का सेवन करता है। उसका धन चोरी हो जाता है अथवा प्रमादवश नष्ट हो जाता है। गुप्तेन्द्रियों की व्याधि से पीड़ित रहता है ॥ ९ ॥

दिवानायके दुष्टता कोणयाते

न चाप्नोति चिन्ताविरामोऽस्य चेतः।

तपश्चर्यया ऽनिच्छयापि प्रयाति
क्रियातुङ्गतां तप्यते सोदरेण ॥ १० ॥

अन्वयः—दिवानायके कोणयाते दुष्टता (जायते), अस्य चेतः चिन्ताविरामं न आप्नोति अनिच्छयापि तपश्चर्यया क्रिया तुङ्गतां याति, सोदरेण तप्यते च ॥ १० ॥

अर्थ—जिसके नवें स्थान में सूर्य रहता है, वह दुष्ट होता है। उसका मन सदैव चिंतित रहता है। अनिच्छा से वह कठिन तप करने वाला होता है तथा अपने सगे भाई से पीड़ित रहता है ॥ १० ॥

प्रयातों ऽशुमान्यस्य मेषूरणेऽस्य
श्रमः सिद्धिदो राजतुल्यो नरस्य ।
जनन्यास्तथायातनामातनोति
क्लमः संक्रमेद्वल्लभैर्विप्रयोगः ॥ ११ ॥

अन्वयः—यस्य नरस्य मेषूरणे अंशुमान् प्रयातः, अस्य श्रमः राजतुल्यः सिद्धिदः। जनन्या यातनां आतनोति, (तस्य) वल्लभैः विप्रयोगः तथा क्लमः संक्रमेत् ॥ ११ ॥

अर्थः—जिसके दसवें स्थान में सूर्य होता है उसका श्रम राजा के समान फलदायक होता है। यह माता को पीड़ा देनेवाला तथा उसके स्वजनों से वियोग होता है। उसका मन सदैव दुःखी रखता है ॥ ११ ॥

रवौ संक्लभेत्स्वं च लाभोपयाते
नृपद्वारतो राजमुद्राधिकारात् ।
प्रतापानले शत्रवः सम्पतन्ति
श्रियोऽनेकधा दुःखभङ्गोद्भवानाम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—रवौ लाभोपयाते नृपद्वारतः राजमुद्राधिकारात् च स्वं अनेकधा श्रियः (संलभेत्) । (अस्य) प्रतापानले शत्रवः सम्पतन्ति, अङ्गोद्भवानाम् दुःखं (च स्यात्) ॥ १२ ॥

अर्थः—जिसके ग्यारहवें स्थान में सूर्य होता है वह पुरुष राजा से धन प्राप्त करता है, और उसके पास अनेक प्रकार की सम्पत्ति होती है। उसके प्रताप से शत्रु नष्ट हो जाते हैं किन्तु सन्तान का दुःख उसे व्यथित करता रहता है ॥ १२ ॥

रविर्द्वादशे नेत्रदोषं करोति
विपक्षाहवे जायतेऽसौ जयश्री ।
स्थितिर्लब्धया लीयते देहदुःखं
पितृव्यापदो हानिरध्वप्रदेशे ॥ १३ ॥

अन्वयः—रवि द्वादशे (स्थितः) असौ नेत्रदोषं करोति, विपक्षाहवे जयश्री जायते, लब्धया स्थितिः सम्पद्यते, देहदुःखं लीयते, पितृव्यापदः (जायन्ते), अध्वप्रदेशे हानिः (च भवति) ॥ १३ ॥

अर्थः—यदि द्वादश स्थान में सूर्य हो तो पुरुष नेत्ररोग से पीड़ित होता है। युद्ध में जयश्री मिलती है। लाभ की इच्छा से एक ही स्थान में निवास होता है। शरीर की पीड़ा नष्ट होती है चाचाओं की ओर से विपत्तियाँ आती हैं। मार्ग में धनकी क्षति होती है ॥ १३ ॥

इति तन्वादिभावफलम् ।

—: ० :—

अथ चन्द्रफलम् ।

विधुर्गोकुलीराजगः सन्वपुःस्थो
धनाढ्यक्षलावण्यमानन्दपूर्णम् ।
विधत्तेऽधनं क्षीणदेहं दरिद्रं
जडं श्रोत्रहीनं नरं शेषलग्ने ॥ १ ॥

अन्वयः—विधुः गोकुलीराजगः सन् वपुःस्थः धनाढ्यक्षलावण्यं आनन्दपूर्णं नरं विधत्ते । शेषलग्ने नरं अधनं क्षीणदेहं दरिद्रं जडं श्रोत्रहीनं च (विधत्ते) ॥ १ ॥

अर्थः—यदि जन्मलग्न में चन्द्रमा वृष, कर्क तथा मेष राशि पर रहे तो वह मनुष्य धनाढ्य, कान्तिमान् तथा पूर्ण आनन्द का भागी होता है । शेष राशियों (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन में रहे तो वह मनुष्य धनहीन, दुर्बल, दरिद्र, मूर्ख तथा बधिर होता है ॥ १ ॥

हिमांशौ वसुस्थानगे धान्यलाभः
शरीरेऽतिसौख्यं विलासोऽङ्गनानाम् ।
कुटुम्बे रतिर्जायते तस्य तुच्छं
वशं दर्शने याति देवाङ्गनाऽपि ॥ २ ॥

अन्वयः—हिमांशौ वसुस्थानगे धान्यलाभः (भवति), शरीरेऽतिसौख्यं (स्यात्) अङ्गनानां विलासः च (स्यात्) कुटुम्बे रतिः जायते, तस्य दर्शने देवाङ्गना अपि वशं याति (इति इदं) तुच्छम् ॥ २ ॥

अर्थः—जिसके धन स्थान में चन्द्रमा होता है उस पुरुष को

धन का लाभ होता है। शरीर से अत्यन्त सुखी रहता है। वह स्त्रियों के साथ विलास करता है। अपने कुटुम्बियों पर प्रेम रखता है। उसे देखकर देवाङ्गनायें भी मुग्ध हो जाती हैं। यह एक छोटी बात है ॥ २ ॥

विधौ विक्रमे विक्रमेणैति वित्तं
तपस्वी भवेद् भामिनीरञ्जितोऽपि ।
कियच्चिन्तयेत्साहजं तस्य शर्म
प्रतापोज्ज्वलो धर्मिणो वैजयन्त्या ॥ ३ ॥

अन्वयः—विधौ विक्रमे (सति) विक्रमेण वित्तं एति, (सः) भामिनीरञ्जितः अपि तपस्वी भवेत् (तस्य) धर्मिणः वैजयन्त्या प्रतापोज्ज्वलः (स्यात्) तस्य कियत् साहजं शर्म चिन्तयेत् ॥ ३ ॥

अर्थः—जिसके तीसरे स्थान में चन्द्र हो तो उसे पराक्रम से धन की प्राप्ति होती है। अनेक स्त्रियों से सहवास करने पर भी वह तपस्वी होता है। उसकी धर्मपताका से उस धार्मिक मनुष्य का यश उज्ज्वल होता है। उसे सहोदर भ्राताओं से सुख मिलता है ॥ ३ ॥

यदा बन्धुगो बान्धवैरात्रिजन्मा
नृपद्वारि सर्वाधिकारी सदैव ।
वयस्यादिमे तादृशं नैव सौख्यं
सुतस्त्रीगणात्तोषमायाति सम्यक् ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदा रात्रिजन्मा बन्धुगो स्यात् (तदा स पुरुषः) सदा एव नृपद्वारि सर्वाधिकारी (भवति)। सुतस्त्रीगणात् सम्यक् तोषं आयाति, आदिमे वयसि तादृशं सौख्यं नैव (लभते) ॥ ४ ॥

अर्थः—जिसके चौथे स्थान में चन्द्रमा होता है वह राजा के

यहाँ महत्तम पदाधिकारी होता है। पुत्र तथा स्त्री का सुख पूर्णरूपेण भोगता है। बाल्यावस्था में यह फल नहीं मिलता ॥ ४ ॥

यदा पञ्चमे यस्य नक्षत्रनाथो
ददातीह सन्तानसन्तोषमेव ।
मतिर्निर्मला रत्नलाभं च भूमिः
कुसीदेन नानाप्तयो व्यावसायात् ॥ ५ ॥

अन्वयः—यस्य नक्षत्रनाथः यदा पञ्चमे एव (स्यात्) तदा (तस्य) इह सन्तानसन्तोषं ददाति, निर्मला मतिं रत्नलाभं भूमिं च ददाति, कुसीदेन व्यावसायात् (च) नाना आप्तयः (जायन्ते) ॥ ५ ॥

अर्थः—जिसके पञ्चम स्थान में चन्द्र होता है वह उत्तम सन्तान-सुख का लाभ करता है। उसकी बुद्धि निर्मल होती है। सूद से और व्यवसाय से अनेक प्रकार के लाभ होते हैं ॥५॥

रिपौ राजते विग्रहेणापि राजा
जितास्तेऽपि भूयो विधौ सम्भवन्ति ।
तदग्रेऽरयो निष्प्रभा भूयसोऽपि
प्रतापोज्ज्वलो मातृशीलो न तद्वत् ॥ ६ ॥

अन्वयः—विधौ रिपौ राजविग्रहेण अपि प्रतापोज्ज्वलः (सन्) राजते, अरयः जिता अपि तदग्रे भूयः भूयः अपि निष्प्रभा भवन्ति तद्वत् मातृशीलः न भवति ॥ ६ ॥

अर्थः—जिसके छठे स्थान में चन्द्रमा होता है वह राजा से विरोध करके भी अपने प्रताप से उज्ज्वल होता है। वह अपने

रिपुओं पर विजय प्राप्त करता है। शत्रु बारम्बार उसके सन्मुख निस्तेज होते हैं। किन्तु वह मनुष्य मातृभक्त नहीं होता है॥ ६॥

ददेद्दारशं सप्तमे शीतरश्मि-
र्धनित्वं भवेदध्ववाणिज्यतोऽपि।
रतिं स्त्रीजने मिष्टभुग्लुब्धचेतः
कृशः कृष्णपक्षे विपक्षाभिभूतः॥ ७॥

अन्वयः—शीतरश्मिः सप्तमे दारशं ददेत्, अध्ववाणिज्यतः धनित्वं भवेत् स्त्रीजने कृष्णपक्षे रतिं लभेत् मिष्टभुक् लुब्धचेतः कृशः विपक्षाभिभूतः (च भवति)॥ ७॥

अर्थः—जिसके सातवें स्थान में चन्द्रमा हो तो उसे स्त्री का पूर्ण सुख होता है। स्थलीय व्यापार में लाभ होता है। वह कृष्णपक्ष में स्त्रियों पर अधिक स्नेह रखता है। मधुर भोजन उसे प्रिय होता है। वह अत्यन्त लोभी होता है। वह दुर्बल होता है तथा अपने शत्रुओं से पराजित होता है॥ ७॥

सभा विद्यते भैषजी तस्य गेहे
पचेत् कर्हिचित् क्वाथमुद्गोदकानि।
महाव्याधयो भीतयो वारिभूता
शशी क्लेशकृत्सङ्कटान्यष्टमस्थः॥ ८॥

अन्वयः—यस्य शशी अष्टमस्थः क्लेशकृत् (स्यात्) तस्य गेहे भैषजीसभा विद्यते, कर्हिचित् क्वाथमुद्गोदकानि पचेत्। महाव्याधयः अरिभूताः भीतयः सङ्कटानि वा स्युः॥ ८॥

अर्थः—जिसके आठवें स्थान में चन्द्रमा रहता है उसके घर में वैद्यों की सभा होती है। कदाचित् वह काढ़ा और मूंगजल पकाता

है। भयंकर व्याधियाँ, शत्रुओं का भय तथा अनेक संकटों को भोगता है।। ।। ८ ।।

तपोभावगस्तारकेशो जनस्य
प्रजाश्च द्विजाः वन्दिनस्तं स्तुवन्ति ।
भवत्येव भाग्यधिको यौवनादेः
शरीरे सुखं चन्द्रवत्साहसं च ।। ९ ।।

अन्वयः—(यस्य) जनस्य तारकेशः तपोभावः तं प्रजाः द्विजाः वन्दिनः च स्तुवन्ति, यौवनादेः भाग्याधिकः भवति। एवं शरीरे सुखं च चन्द्रवत्तु साहसं भवति ।। ९ ।।

अर्थः—जिस मनुष्य के नवें स्थान में चन्द्रमा हो उसकी स्तुति ब्राह्मण, प्रजा तथा बन्दीजन करते हैं। युवावस्था से वह भाग्यशाली होता है। वह शरीर से सुखी रहता है तथा चन्द्रमा के समान ही साहसी होता है ।। ९ ।।

सुखं बान्धवेभ्यः खगे धर्मकर्मा
समुद्राङ्गजे शन्नरेशादितोऽपि ।
नवीनाङ्गनावैभवे सुप्रियत्वं
पुरा जातके सौख्यमल्पं करोति ।। १० ।।

अन्वयः—समुद्राङ्गजे खगे धर्मकर्मा बान्धवेभ्यः सुखं नरेशादितः अपि शं, नवीनाङ्गनावैभवे सुप्रियत्वं (च लभेत्) पुरा जातके अल्पं सौख्यं करोति ।। १० ।।

अर्थः—जिसके दसवें स्थान में चन्द्रमा रहता है वह सदैव धर्म करने वाला होता है। उसे अपने बन्धु-बान्धवों से सुख प्राप्त होता है। राजा तथा धनिकों से भी सुख प्राप्त होता है। नवीन

स्त्री तथा वैभव प्राप्त करता है। सदैव वह प्रिय समाचारों से घिरा रहता है। किन्तु पहली सन्तान से उसे कम सुख प्राप्त होता है ॥ १० ॥

लभेद् भूमिपादिन्दुना लाभगेन
प्रतिष्ठाधिकाराम्बराणि क्रमेण ।
श्रियोऽथ स्त्रियोऽन्तःपुरे विश्रमन्ति
क्रिया वैकृती कन्यका वास्तुलाभः ॥ ११ ॥

अन्वयः—लाभगेन इन्दुना भूमिपात् क्रमेण प्रतिष्ठाधिकाराम्बराणि लभेत् अस्य अन्तःपुरे श्रियः स्त्रियः (च) विश्रमन्ति क्रिया वैकृती । (जायते) कन्यका (उत्पद्यते) वास्तुलाभः (च संजायते) ॥ ११ ॥

अर्थः—जिसके ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा हो उससे राजा की ओर से प्रतिष्ठा, अधिकार तथा उत्तम वस्त्र क्रमानुसार प्राप्त होते हैं। उसके अन्तःपुर में लक्ष्मी तथा उत्तम स्त्रियाँ रहती हैं। उसके कार्य प्रायः पूर्ण नहीं होते, उसे कन्या ही उत्पन्न होती हैं तथा श्रेष्ठ वस्तुयें मिलती हैं ॥ ११ ॥

शशीद्वादशे शत्रुनेत्रादिचिन्ता
विचिन्त्या सदा सद्व्ययो मङ्गलेन ।
पितृव्यादिभार्यादितोऽन्तर्विषादो
न चाऽऽप्नोति कामं प्रियाल्पप्रियत्वम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—शशीद्वादशे शत्रुनेत्रादिचिन्ता विचिन्त्या सदा मङ्गलेन सद्व्ययः पितृव्यादिमात्रादितः अन्तः विषादः प्रियाल्पप्रियत्वं कामं च न आप्नोति ॥ १२ ॥

अर्थः—जिसके बारहवें स्थान में चन्द्रमा रहता है उसे सदैव

शत्रु तथा नेत्रादि अंगों की चिन्ता बनी रहती है, उसका धन सदा मंगल कार्य में व्यय होता है। चाचा और माता से मन असन्तुष्ट रहता है। स्त्रियों से प्रेम अल्प होता है तथा सफल मनोरथ नहीं होता ॥ १२ ॥

इति चन्द्रभावफलम्

—:०:—

अथ भौमफलम्

विलग्ने कुजे दण्डलोहाग्निभीति-
स्तपेन्मानसं केसरी किं द्वितीयः।
कलत्रादिघातः शिरोनेत्रपीडा
विपाके फलानां सदैवोपसर्गः ॥ १ ॥

अन्वयः—कुजे विलग्ने (सति) दण्डलोहाग्निभीतिः (भवेत्) मानसं तपेत्, कलत्रादिघातः शिरोनेत्रपीडा फलानां विपाके सदा एव उपसर्गः (स्यात्) (अपि च) किं द्वितीयः केसरी (स्यात्) ॥ १ ॥

अर्थः—जिसके जन्म लग्न में मङ्गल हो उसे डण्डा, लोहा तथा अग्नि से मृत्यु-भय होता है। उसका मन चिन्तित रहता है। स्त्री-पुत्रादि के नष्ट होने से कष्ट होता है। कार्य के परिणाम खराब होते हैं चाहे वह दूसरा सिंह ही क्यों न हो ॥ १ ॥

भवेत्तस्य किं विद्यमाने कुटुम्बे
धनेऽङ्गारके यस्य लब्धे धने किम्।
यथा त्रायते मर्कटः कण्ठहारं
पुनः सम्मुखं को भवेद्वादमग्नः ॥ २ ॥

अन्वयः · यस्य धने अङ्गारकः भवेत् तस्य कुटुम्बे विद्यमा किम् ! धने लब्धे किम् ! यथा मर्कटः कण्ठहारं त्रायते (तथा स घनं त्रायते) वादभग्नः कः पुनः सम्मुखं भवेत् ॥ २ ॥

अर्थः—जिसके धन स्थान में मंगल हो उसके बृहत् कुटुम्ब से क्या लाभ, अथवा अधिक धन होने से क्या लाभ, जिस प्रकार बन्दर अपने गले में पड़े हुए हार की रक्षा करता है वैसे ही वह भी धन की रखवाली करता है। युद्ध में पराजित कोई भी व्यक्ति पुनः उसका सामना नहीं करता ॥ २ ॥

कुतो बाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मी-
स्तृतीयो न चेन्मङ्गलो मानवानाम् ।
सहोत्थव्यथा भण्यते केन तेषां
तपश्चर्यया चोपहास्यः कथं स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः—(यदि मंगलः तृतीयः चेत् (तर्हि) मानवानां बाहु-वीर्यं कुतः ? बाहुलक्ष्मी कुतः ? तेषां सहोत्थव्यथा केन भण्यते, तपश्चर्यया च उपहास्यः कथं न स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थः—यदि तृतीय स्थल में मङ्गल हो तो भुजा का बल कहाँ से आये ? तथा भुजा से उत्पादित लक्ष्मी कहाँ से हो तथा बन्धु-बान्धवों से आने वाली विपत्तियों का वर्णन कौन करे। तथा तपस्या से उसका उपहास क्यों न हो ? ॥ ३ ॥

यदा भूसुतः सम्भवेत्तुर्यभावे
तदा किं ग्रहाः सानुकूला जनानाम् ।
सुहृद्वर्गसौख्यं न किंचिद्विचिन्त्यं
कृपावस्त्रभूमेर्लभेद् भूमिपालात् ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदा भूसुतः तुर्यंभावे सम्भवेत् तदा जनानां ग्रहाः सानुकूला इति किम् ? सुहृद्वर्गसौख्यं किंचित् न विचिन्त्यम्, भूमिपालात् कृपावस्त्रभूमेर्लभेत् ॥ ४ ॥

अर्थः—यदि चौथे स्थान में मङ्गल हो तो अन्य ग्रह यदि अनुकूल हों तो भी क्या ? पिता, माता, भ्राता, स्त्री-पुत्रादि का सुख उसे नहीं होता। राजा की कृपा से भूमि तथा वस्त्रादि प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

कुजे पंचमे जाठराग्निर्बलीयान्
जातं नु जातं निहन्त्येक एव ।
तदानीमनल्पा मतिः किल्विषेऽपि
स्वयं दुग्धवत्तप्यतेऽन्तः सदैव ॥ ५ ॥

अन्वयः—कुजे पञ्चमस्थे जठराग्निः बलीयान् (भवति) तदानीं किल्विषे अपि अनल्पा मतिः (भवति) सदा एव स्वं दुग्धवत् अन्तः तप्यते, एक एव अजातं जातं(च सुतं) निहन्ति नु ॥ ५ ॥

अर्थः—जिसके पाँचवें स्थान में मंगल हो उसकी जाठराग्नि उग्र होती है। उसमें पाप प्रवृत्ति अधिक होती है। तपे हुए दूध के समान सदैव ही वह जला करता है। मंगल ही उसके गर्व को तथा सन्तति को नष्ट कर देता है ॥ ५ ॥

न तिष्ठन्ति षष्ठेऽरयोऽङ्गारके वै
तदङ्गैरिताः सङ्गरे शक्तिमन्तः ।
मनस्वी सुखी मातुलेयो न तद्वद्
विलीयेत वित्तं लभेतापि भूरिः ॥ ६ ॥

अन्वयः—अङ्गारके षष्ठे (स्थिते) शक्तिमन्तः (अपि)

अरयः तदङ्गैः संगरे न तिष्ठन्ति, मनीषी (भवति), तद्वद् मातुलेयः न सुखी (स्यात्) भूरि लभेतापि विभवं विलीयेत ॥ ६ ॥

अर्थः—जिसके छठवें स्थान में मंगल हो उसके बलवान् शत्रु भी युद्ध में उसके सम्मुख नहीं टिक सकते। वह अत्यन्त विवेकी होता है। मामा का सुख अप्राप्य होता है। उसे अधिक धन मिलता तथा व्यय होता है ॥ ६ ॥

अनुद्धारभूतेन पारिग्रहेण
प्रयाणेन वाणिज्यतो नो निवृत्तिः ।
मुहुर्भङ्गदः स्पर्धिनां मेदिनीजः
प्रहारार्णवैः सप्तमे दम्पतिघ्नः ॥ ७ ॥

अन्वयः—(यदि) मेदिनीजः सप्तमे तर्हि अनुद्धारभूतेन पारिग्रहेण वाणिज्यतः प्रयाणेन न निवृत्तिः नो स्यात् स्पर्धिनां प्रहारार्णवैः मुहुर्भङ्गद। दम्पतिघ्नः (च भवेत्) ॥ ७ ॥

अर्थः—यदि सातवें स्थान में मङ्गल हो तो निश्चित निर्वाह के अथवा व्यापार के कारण यह मनुष्य परदेश से नहीं लौटेगा। शत्रुओं से अथवा पीड़ा से वह सदैव व्यथित होता रहेगा। तथा उसकी स्त्री भी अधिक दिनों तक नहीं जीवित रहती ॥ ७ ॥

शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये
विधानेऽपि चेदष्टमे भूमिसूनुः ।
सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोऽपि
प्रयत्ने कृते भूयते चोपसर्गः ॥ ८ ॥

अन्वयः—भूमिसूनुः अष्टमश्चेत्, (तर्हि) विधाने (विद्यमाने)

अपि अन्ये शुभाः खेचराः तस्य किं कुर्युः ? सत्कृतः अपि सखा न शत्रूयते किम् ? प्रयत्ने कृते उपसर्गैः भूयते ॥ ८ ॥

अर्थः—मङ्गल यदि आठवें स्थान में हो तो शुभग्रह भी उसका क्या उपकार कर सकते हैं ! समादरित होने पर भी उसका मित्र क्या शत्रु नहीं हो जाता ? प्रयत्न करने पर भी उसके कार्यों में विघ्न बाधायें उपस्थित होती हैं ॥ ८ ॥

महोग्रा मतिर्भाग्यवित्तं महोग्रं
तपो भाग्यगो मङ्गलस्तं करोति ।
भवेन्नादिमः श्यालकः सोदरो वा
कुतो विक्रमस्तुच्छलाभो विपाके ॥ ९ ॥

अन्वयः—भाग्ये मङ्गलः तं भाग्यवित्तं महोग्रं करोति, तस्य मतिः महोग्रा (स्यात्) आदिमः श्यालकः भ्राता वा न भवेत्, कुतः विक्रमो विपाके तुच्छ लाभो भवति ॥ ९ ॥

अर्थः—नवें स्थान में मङ्गल होने से मनुष्य धनी, भाग्यवान् तथा ओजस्वी होता है। उसकी बुद्धि क्रूर होती है, उसे जेठा साला, भाई नहीं होता है। उसका पौरुष व्यर्थ होता है। केवल परिणाम में कुछ होता है ॥ ९ ॥

कुले तस्य किं मङ्गलं मङ्गलो नो
जनैर्भूयते मध्यभावे यदि स्यात् ।
स्वतः सिद्ध एवावतंसीयतेऽसौ
वराकोऽपि कण्ठीरवः किं द्वितीयः ॥ १० ॥

अन्वयः—यदि मङ्गलः मध्यभावे नो स्यात् तस्य कुले मङ्गलं

किम्? जनैः भूयते, वराकः अपि असौ स्वतः सिद्ध एव अवतंसीयते, (सः) किं द्वितीयः कंठीरवः? ॥ १० ॥

अर्थः—यदि दसवें स्थान में मंगल न हो तो क्या उसके घर में मङ्गल कार्य हो सकता है? अर्थात् नहीं होता। लोग उसका आदर करते हैं। नीच कुल का होकर भी वह अपनी प्रतिभा से सबको दबा देता है। क्या वह दूसरा सिंह है॥ १० ॥

कुजः पीडयेल्लाभगोऽपत्यशत्रून्
भवेत्सम्मुखो दुर्मुखोऽपि प्रतापात्।
धनं वर्धते गोधनैर्वाहनैर्वा
सकृच्छून्यतान्ते च पैशुन्यभावात् ॥ ११ ॥

अन्वयः—लाभः कुजः अपत्यशत्रून् पीडयेत्, दुर्मुखः अपि प्रतापात् सम्मुखः भवेत्, गोधनैः वाहनैः वा धनं वर्धते, पैशुन्यभावात् च अन्ते सकृत् शून्यता (स्यात्) ॥ ११ ॥

अर्थः—ग्यारवें स्थान का मङ्गल शत्रुओं एवं सन्तानों को पीड़ित करता है। वह मनुष्य अभागा होता है तथापि अपने को भाग्यवान् समझता है। गाय, हाथी, घोड़ा तथा रथ के व्यापार में धनकी प्राप्ति होती है। वह अत्यन्य कृपण होता है तथा धन नष्ट हो जाता है॥ ११ ॥

शताक्षोऽपि तत्सक्षतो लौहघातैः
कुजो द्वादशोऽर्थनाशं करोति॥
मृषा किंवदन्ती भयं दस्युतो वा
कलिं पारधीहेतुदुःखं विचिन्त्यम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—द्वादशः कुजः अर्थनाशं करोति, शताक्षः अपि तत् लोहघातैः सक्षतः (भवेत्) मृषा किंवदन्ती (स्यात्) दस्युतः भयं वा (भवेत्) पारधी हेतु दुःखं विचिन्त्यम् ॥ १२ ॥

अर्थः—जिसके वारहवें स्थान में मंगल हो उसका धर्म नष्ट हो जाता है। उसके शस्त्रों से इन्द्र भी आहत हो जाते हैं। उसे झूठा अपवाद भी लगता है। चोरों से भय और कलह होता है। दूसरे के कारण उसे कष्ट होता है ॥ १२ ॥

॥ इति भौमभावफलम् ॥

—:०:—

अथ बुधफलम्–

बुधो मूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टम्
गरिष्ठा धियो वैखरीवृत्तिभाजः ।
जना दिव्यचामीकरीभूतदेहा-
श्चिकित्साविदो दुश्चिकित्स्यो भवन्ति ॥ १ ॥

अन्वयः—मूर्तिगः बुधः अन्यदरिष्टं मार्जयेत् (तेषां) गरिष्ठा धियः, जना वैखरीवृत्तिभाजः दिव्यचामीकरीभूतदेहा चिकित्साविदो दुश्चिकित्स्याः भवन्ति ॥ १ ॥

अर्थः—जिसके प्रथम में बुध होता है उसके अन्य ग्रहों से जो उसका अरिष्ट उत्पन्न होता उसे नाश करता है। उसकी बुद्धि श्रेष्ठ होती है। वह लेखक की जीविका अपनाता है। उसका शरीर सुवर्ण के समान कान्तिवाला होता है। ऐसे लोग चिकित्सक भी होते हैं किन्तु स्वयं रोगग्रस्त होने पर उनकी चिकित्सा कठिन हो जाती है ॥ १ ॥

धने बुद्धिमान् बोधने बाहुतेजाः
सभासङ्गतो भासते व्यास एव।
पृथुदारता कल्पवृक्षस्य यद्वद्
बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोऽयम् ॥ २ ॥

अन्वयः—यस्य बुधः धने (स्यात्) सः बुद्धिमान् बाहुतेजाः (जायते) सभासङ्गतो व्यास एव भासते यद्वद् कल्पवृक्षस्य (अस्य) पृथूदारता बुधैः भण्यते अयं भोगतः षट्पदः (अस्ति) ॥ २ ॥

अर्थः—जिसके दूसरे स्थानमें बुध हो तो वह बुद्धिमान् तथा स्वयं के भुजबल से विख्यात होता है। सभा आदि में साक्षात् व्यास के समान प्रतीत होता है। उदारता में लोगों में कल्पवृक्ष के समान विख्यात होता है। तथा विषय-भोग में भँवरे के समान होता है ॥ २ ॥

वणिङ्मित्रता पण्यकृद्वृत्तिशीलो
वशित्वं धियो दुर्वशानामुपैति।
विनीतोऽतिभागं भजेत्संन्यसेद्वा
तृतीयेऽनुजैराश्रितो ज्ञे लतावान् ॥ ३ ॥

अन्वयः—ज्ञे तृतीये (सति) वणिङ्मित्रता पण्यकृद्वृत्तिशीलः जायते, दुर्वशानां धियो वशित्वं उपैति, विनीतः (भवति), अति भागं भजेत् वा संन्ययेत् लतावान् अनुजैः आश्रितः (भवति) ॥ ३ ॥

अर्थः—जिसके तीसरे स्थान में बुध होता है वह पुरुष वैश्य अर्थात् व्वापारी से मित्रता करता है तथा उसी व्यापार में लीन होता है। वह उस पुरुष के वश में रहता है जो अन्य के वशीभूत न हो। वह नम्र स्वभाव वाला होता है। वह विषयानुरक्त अथवा

संन्यासी होता है। लता के समान अपने कनिष्ठ भ्राताओं का आश्रय होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे चरेच्चन्द्रजश्चारुमित्रो
विशेषाधिकृद् भूमिनाथाङ्गणस्य ।
भवेल्लेखको लिख्यते वा तदुक्तं
तदाशापरा पैतृकन्नो धनं च ॥ ४ ॥

अन्वयः—चन्द्रजः चतुर्थे, चारुमित्रः चरेत् भूमिनाथाङ्गणस्य विशेषाधिकृत् लेखकः भवेत्, तदाशापरैः तदुक्तं लिख्यते वा पैतृकं धनं च नो प्राप्नोति ॥ ४ ॥

अर्थः—जिसके चौथे स्थान में बुध हो तो वह बुद्धिमान् होता है तथा अपने मित्रों के साथ विहार करता है वह राजद्वार का प्रधान लेखाधिकार होता है तथा उसके अनुचर उसके कथनानुसार लिखते हैं। वह पिता के धन से अर्थात् पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहता है ॥ ४ ॥

वयस्यादिमे पुत्रगर्भो न तिष्ठे-
द्भवेत्तस्य मेधार्थसम्पादयित्री ।
बुधैर्भण्यते पंचमे रौहिणेये
कियद्विद्यते कैतवस्याभिचारम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—रौहिणेये पंचमे स्थिते आदिमे वयसि पुत्रगर्भः न तिष्ठेत् तस्य मेधा अर्थसम्पादयित्री भवेत्, कियत् अभिचारं कैतवं विधत्ते एवं बुधैः भण्यते ॥ ५ ॥

अर्थः—जिसके पाँचवें स्थान में बुध होता है उसको पहली अवस्था में पुत्र नहीं उत्पन्न होता। वह स्वार्थ बुद्धिवाला होता है।

वह मारण, मोहन आदि कितने छल कपट से पूर्ण होता है। ऐसा ज्योतिषियों का कथन है ॥ ५ ॥

विरोधो जनानां निरोधो रिपूणां
प्रबोधो यतीनां च रोधोऽनिलानाम् ।
बुधे सद्व्यये व्यावहारो निधीनां
बलादर्थकृत्सम्भवेच्छत्रुभावे ॥ ६ ॥

अन्वयः--बुधे शत्रुभावे स्थिते जनानां विरोधः रिपूणां निरोधः, यतीनां प्रबोधः, अनिलानां रोधः, सद्व्यये निधीनां व्यवहारः बलात् अर्थकृत् सम्भवेत् ॥ ६ ॥

अर्थः—यदि छठें स्थान में बुध हो तो मनुष्यों के साथ विरोध होता है। शत्रुओं को वशीभूत करने में, प्राण आदि वायु को रोकने में साधुओं के ज्ञान एवं श्रेष्ठ कार्यों में उसका धन व्यय होता है। वह अपने पुरुषार्थ से धन इकट्ठा करता है ॥ ६ ॥

सुतः शीतगोः सप्तमे शं युवत्या
विधत्ते तथा तुच्छवीर्यञ्च भोगे ।
अनस्तङ्गतो हेमवद्देहशोभां
न शक्नोति तत्सम्पदो वानुकर्तुम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—अनस्तङ्गतः शीतगोः सुतः सप्तमे स्थितः सन् युवत्या शं विधत्ते, तथा भोगे तुच्छवीर्यं विधत्ते हेमवत् देहशोभां तत्सम्पदः वा अनुकर्तुं न शक्नोति ॥ ७ ॥

अर्थः--उदय हुआ बुध यदि सातवें स्थान में हो तो वह स्त्री को सुखदायी होता है तथा रति के समय थोड़ा वीर्य देता है !

उसका शरीर स्वर्ण कान्ति की भाँति देदीप्यमान रहता है तथा सम्पत्ति में अतुल होता है ॥ ७ ॥

शतञ्जीविनी रन्ध्रगे राजपुत्रे
भवन्तीह देशान्तरे विश्रुतास्ते ।
निधानं नृपाद्विक्रयाद्वा लभन्ते
युवत्युद्भवं क्रीडनं प्रीतिभाजः ॥ ८ ॥

अन्वयः—रात्रपुत्रे रंध्रगे शतंजीविनः इह देशान्तरे च विश्रुता भवन्ति, ते प्रीतिमन्तो नृपात् विक्रयात् वा निधानं युवत्युद्भवं क्रीडनं च लभन्ते ॥ ९ ॥

अर्थः—जिनके जन्म लग्न से आठवें स्थान में बुध होता है, वे सौ वर्ष तक जीवित रहते हैं। इस देश तथा अन्य देशों में ख्याति प्राप्त करने वाले होते हैं। राजा या व्यापार से धन कमाते हैं। उन्हें स्त्रियों के साथ क्रीडा करने में अधिक आनन्द प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

बुधे धर्मगे धर्मशीलेऽति धीमान्
भवेद्दीक्षितः स्वर्धुनीस्नानको वा ।
कुलोद्योतकृद्भानुवन् भूमिपालाद्
प्रतापाधिको बाधको दुर्मुखानाम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—बुधे धर्मगे धर्मशीलः अति धीमान् दीक्षितः वा स्वर्धुनी-स्नानकः भानुवत् कुलोद्योतकृत् भूमिपालात् प्रतापाधिकः दुर्मुखानां बाधकश्च भवेत् ॥ ९ ॥

अर्थः—यदि नवें स्थान में बुध हो तो वह मनुष्य धर्मात्मा अत्यन्त बुद्धिमान्, सोमयज्ञ करने वाला, गंगा स्नान करने वाला

सूर्य के समान अपने कुलको प्रकाशित करने वाला, राजा से भी अधिक प्रतापी तथा दुर्जनों का विनाश करने वाला होता है ।। ९ ।।

मितं संवदेन्नो मितं संल्लभेत्
प्रसादादिवैकारिसीराजवृत्तिः ।
बुधे कर्मगे पूजनीयो विशेषात्
पितुः सम्पदो नीतिदण्डाधिकारात् ।। १० ।।

अन्वयः—बुधे कर्मगे सति पितुः सम्पदः विशेषात् पूजनीयः नीतिदण्डाधिकारात् प्रसादादिवैकारिसीराजवृत्तिः (स्यात्), मितं संवेदत् नो मितं संल्लभेत् ।। १० ।।

अर्थः—जिसके दसवें स्थान में बुध हो वह पैत्रिक सम्पत्ति प्राप्त करता है । पूजनीय होता है । नीति तथा दण्डशास्त्रों पर अधिकार रखने से राजा की भाँति दंड और दया करने का अधिकारी होता कम बोलता है तथा अधिक लाभ करता है ।। १० ।।

विना लाभभावे स्थितं भेषजातं
न लाभो न लावण्यमानृण्यमस्ति ।
कुतो कन्यकोद्वाहदानं च देयं
कथं भूसुरास्त्यक्ततृष्णा भवन्ति ।। ११ ।।

अन्वयः—भेषजातं लाभभावे स्थितं विना न लाभं न लावण्यं आनृण्यं अस्ति, कन्यकोद्वाहदानं देयं कुतः ? भूसुराः कथं त्यक्ततृष्णा भवन्ति ।। ११ ।।

अर्थ—यदि बुध ग्यारहवें स्थान में न हो तो न लाभ होता है और न लावण्य तथा मनुष्य ऋणमुक्त भी नहीं होता । कन्या

के लिये दहेज कहाँ से आये तथा ब्राह्मणों को उसकी ओर से तृप्ति कैसे हो ? ॥ ११ ॥

न चेद् यस्य द्वादशे शीतांशुजातः
कथं तद्गृहं भूमिदेवा भजन्ति ।
रणे वैरिणो भीतिमायान्ति कस्मा-
द्धिरण्यादिकोशं शठः कोऽनुभूयात् ॥ १२ ॥

अन्वयः—यस्य द्वादशे शीतांशुजातः न चेद् भूमिदेवाः कथं तद्गृहं भजन्ति, वैरिणः रणे कस्मात् भीतिं आयान्ति, हिरण्यादि कोशं कः शठः अनुभूयात् ॥ १२ ॥

अर्थः—जिसके बारहवें स्थान में बुध न हो तो ब्राह्मण उसके घर में कैसे जायँ ? उसके रिपुगण युद्ध में कैसे उससे भयभीत हों ? सुवर्ण आदि सम्पत्ति भला कौन दुष्ट भोग सकता है ? अर्थात् बुध के बारहवें स्थान में स्थित रहने से उसके घर में ब्राह्मण लोगों का पदार्पण होता है। युद्ध में शत्रु भयभीत रहते हैं, तथा उसके कोष से दुष्टजन चोरी नहीं करते ॥ १२ ॥

॥ इति बुधभावफलम् ॥

—:०:—

अथ गुरुफलम्—

गुरुत्वं गुणैर्लग्नगे देवपूज्ये
सुवेषी सुखी दिव्यदेहोऽल्पवीर्यः ।
गतिर्भाविनी पारलौकी विचिन्त्या
वसूनि व्ययं सम्बलेन व्रजन्ति ॥ १ ॥

अन्वयः—देवपूज्ये लग्नगे गुणैः गुरुत्वं (भवेत्) सुवेषी सुस्त्री दिव्यदेहः स्वल्पवीर्यः (स्यात्) भाविनी पारलौकी गतिः विचिन्त्या, वसूनि सम्बलेन व्रजन्ति ॥ १ ॥

अर्थः—जिसके जन्म-लग्न में बृहस्पति होता है वह अपने गुणों से आदरणीय होता है। मृत्यूपरान्त उसकी शुभ गति होती है। उसका धन पर्यटन में व्यय होता है ॥ १ ॥

कवित्वे मतिर्दण्डनेतृत्वशक्ति-
र्मुखेदोषधृक् शीघ्र भोगार्त एव।
कुटुम्बे गुरौ कष्टतो द्रव्यलब्धिः
सदा नो धनं विश्रमेद्यत्नतोऽपि ॥ २ ॥

अन्वयः—गुरौ कुटुम्बे कवित्वे मतिः, दण्डनेतृत्व शक्तिः, मुखे दोषधृक् शीघ्र भोगार्तः एव, कष्टतो द्रव्यलब्धिः यत्नतः अपि धनं न विश्रमेत् ॥२॥

अर्थः—जिसके दूसरे स्थान में बृहस्पति होता है वह कवि हृदय होता है। अर्थात् कविता-प्रेमी होता है। उसमें राज्य-संचालन की शक्ति होती है। उसे भूख की व्याधियाँ अधिक कष्ट देती हैं या अधिक बकवादी होता है। उसे कठिनता से द्रव्य प्राप्त होता है तथा प्रयत्नशील रहने पर भी उसके पास धन नहीं टिकता ॥ २ ॥

भवेद्यस्य दुश्चिक्यगो देवमंत्री
लघूनां लघीयान् सुखं सोदराणाम्।
कृतघ्नो भवेन्मित्रसार्थे न मैत्री
ललाटोदयेऽर्थलाभो न तद्वत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—यस्य देवमंत्री दुश्चिक्यगो भवेत् (सः) लघूनां लघीयान्

सोदराणां सुखं (भवेत्), (सः) कृतघ्नः, मित्रसार्थे मैत्री न, ललाटोदये अपि तद्वत् अर्थलाभः नो (भवेत्) ।। ३ ।।

अर्थः—जिसके तीसरे स्थान में बृहस्पति होता है वह नीच होता है। उसे सहोदर भ्राताओं का सुख मिलता है। वह कृतघ्न होता है तथा किसीसे मित्रता नहीं होती है। भाग्यवान् होने पर भी उसे उतना धन नहीं प्राप्त होता जितना उस जैसे भाग्यवान् को मिलना चाहिए ।। ३ ।।

गृहद्वारतः श्रूयते वाजिहेषा
द्विजोच्चारितो वेदघोषोऽपि तद्वत् ।
प्रतिस्पर्धिनः कुर्वते पारिचर्यं
चतुर्थे गुरौ तप्तमन्तर्गतं च ।। ४ ।।

अन्वयः—चतुर्थे गुरौ (स्थिते) गृहद्वारतः वाजिह्रेषा तद्वत् द्विजोच्चारितो वेदघोषः अपि श्रूयते, प्रतिस्पर्धिनः पारिचर्यं कुर्वते एव अपि च अन्तर्गतं तप्तम् (भवति) ।। ४ ।।

अर्थः—यदि गुरु चौथे स्थान में हो तो उस मनुष्य को घोड़ों की हिनहिनाहट तथा ब्राह्मणों के वेदघोष सुन पड़ते हैं। उसके शत्रुजन भी उसकी सेवा किया करते हैं। इतने पर भी उसका अन्तःकरण असन्तुष्ट रहता है ।। ४ ।।

विलासे मतिर्बुद्धिगे देवपूज्ये
भवेज्जल्पकः कल्पको लेखको वा ।
निदाने सुते विद्यमानेऽतिभूतिः
फलोपद्रवः पक्वकाले फलस्य ।। ५ ।।

अन्वयः—देवपज्ये बुद्धिगे विलासे मतिः भवेत्, (सः) जल्पकः

कल्पकः लेखकः वा (भवेत्) फलस्य पक्वकाले फलोपद्रवः (स्यात्) सुते विद्यमाने अपि निदाने अतिभूतिः (स्यात्) ॥ ५ ॥

अर्थः—जिसके पाँचवें स्थान में गुरु हो तो वह विलासी बुद्धि वाला होता है। वह श्रेष्ठवक्ता, काल्पनिक अथवा लेखक होता है। उसके कर्मों के फल के प्राप्तिकाल में विपत्ति आती है। पुत्र के कारण भी कभी-कभी धनप्राप्ति हो जाती है ॥ ५ ॥

रुजार्तो जनन्या रुजः सम्भवेयु-
रिपौ वाक्पतौ शत्रुहन्तृत्वमेति।
बलादुद्धतः को रणे तस्य जेता
महिष्यादिशर्मा न तन्मातुलानाम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—वाक्पतौ रिपौ (चेत्) रुजा आर्तः (भवति) शत्रुहन्तृत्वं एति, बलादुद्धतः भवति, तस्य रणे कः जेता महिष्यादि शर्मा (भवति) तत् मातुलानां न (भवेत्) च जनन्या रुजः सम्भवेयुः ॥ ६ ॥

अर्थः—जिसके छठें स्थान में बृहस्पति हो वह सदा रोगी रहता है। वह शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है। वह युद्ध में अजेय होता है। उसे भार्या का सुख मिलता है; किन्तु मामा का सुख नहीं प्राप्त होता। उसकी माता भी रोगिणी रहती है ॥ ६ ॥

मतिस्तस्य बह्वी विभूतिश्च बह्वी
रतिर्वै भवेद्भामिनीनामबह्वी।
गुरुर्गर्वकृद्यस्य जामित्र भावे
सपिण्डाधिकोऽखण्डकन्दर्प एव ॥ ७ ॥

अन्वयः—यस्य जामित्र भावे गुरुः (स्यात्) तस्य मतिः

बह्वी विभूतिः च बह्वी (भवेत्) वै भामिनीनां रतिः अबह्वी (भवेत्) गर्वकृत् सपिण्डाधिकः अखण्डकंदर्प एव (भवेत्) ॥ ७ ॥

अर्थः—जिसके सातवें स्थान में गुरु हो उसकी बुद्धि और विभूति श्रेष्ठ होती है। वह स्त्रियों का अधिक प्रेमी नहीं होता। वह बलवान् तथा कामदेव के समान सुन्दर होता है ॥ ७ ॥

चिरं नो वसेत्पैतृके चैव गेहे
चिरस्थायिनो तद्गृहं यस्य देहम्।
चिरं नो भवेत्तस्य नीरोगमङ्ग
गुरुर्मृत्युगो यस्य वैकुण्ठगन्ता ॥ ८ ॥

अन्वयः—यस्य गुरुः मृत्युगः, सः पैतृके गेहे चिरं न वसेत् तद्गेहं तस्य देहं च चिरस्थायि न,तस्य अङ्गं चिरं निरोगं नः वैकुण्ठ-गन्ता स्यात् ॥ ८ ॥

अर्थः—जिसके आठवें स्थान में बृहस्पति होता है वह बहुत काल पितृगृह में नहीं रहता है। वह अधिक समय तक निरोग नहीं रहता। मृत्युकेउपरान्त वह स्वर्गवासी होता है ॥ ८ ॥

चतुर्भूमिकं ततगृहं तस्य भूमी-
पतेर्वल्लभो वल्लभा भूमिदेवाः।
गुरौ धर्मगे बान्धवाः स्युर्विनीताः
सदाऽऽलस्यता धर्म वैगुण्यकारी ॥ ९ ॥

अन्वयः—गुरौ धर्मगे तद्गृहं चतुर्भूमिकं (स्यात्) भूमिपतेः वल्लभाः (स्युः) बान्धवाः विनीता स्युः आलस्यतः सदा धर्मं वैगुण्यकारी (भवति) ॥ ९ ॥

अर्थ—जिसके नवें स्थान में बृहस्पति होता है उसका घर चार खण्डों का होता है। वह राजप्रिय होता है तथा ब्राह्मणों का प्रेमी अर्थात् भक्त होता है। उसके बन्धु-बान्धव उससे प्रेम करते हैं। वह आलस्य के कारण धर्मकृत्यों में भी आलस्य करता है॥ ९॥

ध्वजा मण्डपे मन्दिरं चित्रशाला
पितुः पूर्वजेभ्योऽपि तेजोऽधिकत्वम्।
न तुष्टो भवेच्छर्मणां पुत्रकाणां
पचेत्प्रत्यहं प्रस्थसामुद्रमन्नम्॥ १०॥

अन्वयः—(गुरौ कर्मगे सति) मण्डपे ध्वजा, मन्दिरे चित्रशाला पितु पूर्वजेभ्यः अपि तेजोऽधिकत्वं भवेत्, पुत्रकाणां शर्मणां तुष्टः न भवेत्, प्रत्यहं प्रस्थसामुद्रं अन्नं पचेत्॥ १०॥

अर्थः—जिसके दसवें स्थान में गुरु हो उसके गृह के ऊपर ध्वजा लहराती है। उसका गृह चित्रों से सुशोभित रहता है। तथा उसका तेज पूर्वजों से भी अधिक होता है। वह अपने पुत्रों से सन्तुष्ट नहीं रहता। उसके घर में उतना अन्न पकता है जिसमें सेर भर समुद्री नमक पड़ता है॥ १०॥

अकुप्यं च लाभे गुरौ किन्न लभ्यं
वदन्तीष्टधीमन्तमन्ये मुनीन्द्राः।
पितुर्भारभूतस्त्वाङ्गजास्तस्य पंच
परार्थस्तदर्थो न चेद्वैभवाय॥ ११॥

अन्वयः—गुरौ लाभे (स्थिते) किं अकुप्यं न लभ्यम्, अन्ये

मुनीन्द्राः इष्टधीमन्तं वदन्ति, पितुः भारभृत् तस्य स्वाङ्गजाः पंच (भवन्ति) तदर्थः परार्थः वैभवाय न चेत् (भवति) ।। ११ ।।

अर्थः—जिसके ग्यारहवें स्थान में गुरु हों उसे क्यों सोने और चाँदी के पदार्थ प्राप्त नहीं होते ? वह बुद्धिमान् होता है। वह अपने पिता के भार का वहन करने वाला होता है। उसे पाँच पुत्र होते हैं। उसका धन परोपकार में व्यय होता है। धनी बनने अथवा भोग के लिए नहीं होता ।। ११ ।।

यशः कीदृशः सद्व्यये साभिमाने
मतिः कीदृशी वंचना चेत्परेषाम् ।
विधिः कीदृशोऽर्थस्य नाशो हि येन
त्रयस्ते भवेयुर्व्यये यस्य जीवः ।। १२ ।।

अन्वयः—यस्य जीवः व्यये (तस्य) साभिमाने सद्व्यये यशः कीदृशः (भवेत्) परेषां वंचना चेद् मतिः कीदृशी (भवेत्) येन अर्थस्य नाश (सः) विधिः कीदृशः (स्यात्) ते त्रयः भवेयुः ।। १२ ।।

अर्थः—जिसके बारहवें स्थान में गुरु होता है उसे अभिमान के साथ उत्तम कार्यों में व्यय करने पर भी कैसे यश प्राप्त हो ? दूसरों की वंचना से उसकी बुद्धि की परख कैसे हो ? जिस कार्य में धन का नाश हो वह कैसे हो । अर्थात् जिसके बारहवें भाव में बृहस्पती होता है उसके ये तीनों कृत्य निष्फल होते हैं ।। १२ ।।

।। इति गुरुभावफलम् ।।

—: ० :—

अथ शुक्रफलम्

समीचीनमङ्गं समीचेनसङ्गः
समीचोन वह्वङ्गनाभोगयुक्तः ।
समोचीन कर्मा समीचान शर्मा
समीचेन शुक्रो यदा लग्नवर्ती ॥ १ ॥

अन्वयः—यदा समीचीन शुक्रः लग्नवर्ती, समीचीनं अङ्गं समीचीनसङ्गः समीचीन वह्वङ्गनाभोगयुक्तः समीचीन कर्मा, समीचीन शर्मा, स्यात् ॥ १ ॥

अर्थः—जिसके लग्न स्थान में समीचीन शुक्र होते हैं उसका अङ्ग विन्यास मोहक होता है, वह श्रेष्ठ पुरुषों का संग अर्थात् सत्संग करता है, श्रेष्ठ रमणियों के साथ रमण के योग्य होता है। उच्च कर्मों को करता है तथा उत्तम सुख का भोग करता है ॥ १ ॥

मुखं चारुभाषं मनीषाऽपि चार्वी
मुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य ।
कुटुम्बे स्थिते पूर्वदेवस्य पूज्यः
कुटुम्बेन किं चारु चार्वङ्गि कामः ॥ २ ॥

अन्वयः—पूर्वदेवस्य पूज्यः कुटुम्बे स्थिते मुखं चारुभाषं, मनीषा अपि चार्वी, तस्य मुखं चारु, वासांसि चारूणि, चार्वाङ्गिकामः (स्यात्) चारु कुटुम्बेन किम् ॥ २ ॥

अर्थः—जिसके दूसरे स्थान में शुक्र होता है वह प्रियभाषी होता है तथा बुद्धिमान् होता है। उसका आनन रूपवान् होता है। उसके वस्त्र सुन्दर होते हैं। वह सुन्दर स्त्री पाने का इच्छुक होता है। वह अपने कुटुम्ब से क्या सुन्दर होता है ? ॥ २ ॥

रति स्त्रीजने तस्य नो बन्धुनाशो
गुरुर्यस्य दुश्चिक्यगो दानवानाम् ।
न पूर्णो भवेत् पुत्रसौख्येऽपिसेना-
पतिः कातरो दानसंग्रामकाले ॥ ३ ॥

अन्वयः—यस्य दानवानां गुरुः दुश्चिक्यगः तस्य स्त्रीजने रतिः न । बन्धुनाशः, पुत्रसौख्ये पूर्णः न सेनापतिः दान-संग्रामकाले कातरः (भवति) ॥ ३ ॥

अर्थः—जिसके तीसरे स्थान में शुक्र होता है वह स्त्रियों का प्रेमी नहीं होता, उसके बन्धु-बान्धव नष्ट नहीं होते । पुत्रसुख होने पर भी उसकी मनोकामना असन्तुष्ट रहती है । सेनापति होकर दान और युद्ध के समय घबरा जाता है ॥ ३ ॥

महत्वेऽधिको यस्य तुर्येऽसुरेज्यो
जनैः किं जननैश्चापरै रुष्टतुष्टैः
कियत्पोषयेज्जन्मतः संजनन्या
अधीनार्पितोपायनैरेव पूर्णः ॥ ४ ॥

अन्वयः—यस्य असुरेज्यो तुर्ये (स्यात्) स जनैः महत्वे अधिकः (स्यात्) अपरैः रुष्टतुष्टे जनैः किम् ? अधीनार्पितो पायनैः एव पूर्णः इति कियत् जन्मतः सञ्जनन्याः पोषयेत् ॥ ४ ॥

अर्थः—जिसके चौथे स्थान में शुक्र हो वह अन्य जनों से महत् होता है । दूसरे के क्रोध अथवा प्रसन्नता से उसकी क्या हानि हो सकती है ? अनेक वशीभूत लोगों के भेंट से ही उसका घर भरा रहता है । वह जन्म से ही अपनी माता का पालन करता है ॥ ४ ॥

सुपुत्रेऽपि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे
प्रतापेन किं यत्न सम्पादितार्थः ।

व्युदर्के विना मंत्रमिष्टाशनाभ्या-
मधीतेन किं चेत्कवित्वे न शक्तिः ॥ ५ ॥

अन्वयः—यस्य शुक्रः पुत्रे तस्य सुपुत्रे अपि न किं (फलम्) यः यत्नसम्पादितार्थः (तस्य) प्रतापेन किं (फलम्) व्युदर्कं बिना मंत्र-मिष्टाशनाभ्यां किं प्रयोजनम्, कवित्वे शक्तिः न चेत् (तर्हि) अधी-तेन किं (फलम्) ॥ ५ ॥

अर्थः—जिसके पाँचवें स्थान में शुक्र होता है उसके सुपुत्र होने से क्या लाभ ? जिसका कार्य परिश्रम से ही सिद्ध हो उसका पराक्रम से क्या प्रयोजन ? उत्तर काल के फल के बिना ही मंत्र और मिष्टान्न भोजन से क्या प्रयोजन ? उसके विद्योपार्जन से ही क्या लाभ जब वह कवित्व शक्ति से शून्य हो ? ॥ ५ ॥

सदा दानवेज्ये सुधासिक्त शत्रु-
र्व्ययः शत्रुगे चोत्तमौ तौ भवेताम् ।
विपद्येत सम्पादितं चापि कृत्यं
तपेन्मन्त्रतः पूज्य सौख्यं न धत्ते ॥ ६ ॥

अन्वयः—दानवेज्ये शत्रुगे सुधासिक्तशत्रुः व्ययः च तौ उत्तमौ भवेताम्, सम्पादितं च अपि कृत्यं सदा विपद्येत, मंत्रतः तपेत् पूज्यं सौख्यं न धत्ते ॥ ६ ॥

अर्थः—जिसके छठें स्थान में शुक्र हो उसको प्रबल शत्रु तथा व्यय होते हैं। उसके ठीक रीति से किये हुए सभी कार्य निष्फल होते हैं। बुरी सलाह से उसे कष्ट मिलता है। वह पिता, गुरु आदि के सुख से वंचित रहता है ॥ ६ ॥

कलत्रे कलत्रात्सुखं नो कलत्रात्
कलत्रं तु शुक्रे भवेद्रत्नगर्भम् ॥

विवलासाधिको गण्यते च प्रवासी
प्रवासाल्पकः के न मुह्यन्ति तस्मात् ॥ ७ ॥

अन्वयः—शक्रे कलत्रे (स्थिते) कलत्रात् सुखं नो भवेत्, कलत्रात् तु कलत्रं रत्नगर्भं भवेत्, विलासाधिकः प्रवासी प्रवासाल्पकः च गण्यते, तस्मात् के न मुह्यन्ति ॥ ७ ॥

अर्थः—जिसके सातवें स्थान में शुक्र होता है उसके कटि भाग में पीड़ा, रहती है। उसकी स्त्री को उत्तम पुत्ररत्न होता है वह बड़ा विलासी, प्रवासी, तथा अल्प उद्योगी होता है। उसे देखकर कौन मुग्ध नहीं होता ? ॥ ७ ॥

जनक्षुद्रवादी चिरं चारु जीवे-
चतुष्पात्सुखं दैत्यपूज्यो ददाति ।
जनुष्यष्टमे कष्टसाध्यो जयार्थः
पुनर्वर्धते दीयमानं धनर्णम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—जनुषि अष्टमे दैत्यपूज्यः चतुष्पात्सुखं ददाति क्षुद्रवादी जनः चिरं चारु जीवेत् (तस्य) जयार्थः कष्टसाध्यः धनर्णं दीयमानं पुनः वर्धते ॥ ८ ॥

अर्थः—जिसके आठवें स्थान में शुक्र होता है उसे घोड़ा, हाथी इत्यादि का पूर्ण रूपेण सुख प्राप्त होता। वह कटुभाषी तथा चिरंजीवी होता है। उसके कार्य बड़े कष्ट से सफल होते हैं ऋण को लौटा देने पर भी बढ़ता रहता है ॥ ८ ॥

भृगौ त्रित्रिकोणे पुरे के न पौरा
कुसीदेन ये बुद्धिमस्मै ददीरन् ।
गृहं ज्ञायते तस्य धर्मध्वजादेः,
सहोत्थादि सौख्यं शरीरे सुखं च ॥ ९ ॥

अन्वयः—भृगौ त्रित्रिकोणे के पौराः ये कुसीदेन वृद्धि अस्यै न ददीरन्, तस्य गृहं धर्मध्वजादेः ज्ञायते, सहोत्थादिसौख्यं शरीरे सुखं च ॥ ९ ॥

अर्थः—यदि जन्मलग्न से नवें स्थान में शुक्र हो तो किस नगर के स्वामी ऐसे हैं जिन्होंने इसे व्याज की बढ़ती के रुपये न दिये हों। धर्म की पताका के कारण वह प्रसिद्ध होता है। उसे अपने भ्राताओं का सम्पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा उसका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है ॥ ९ ॥

भृगुः कर्मगो गोत्रवीर्यं रुणद्धि
क्षयार्थो भ्रमः किन्न आत्मीय एव ।
तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्त्या
जनाडम्बरैः प्रत्यहं वा विवादात् ॥ १० ॥

अन्वयः—कर्मगः भृगुः गोत्रवीर्यं रुणद्धि, आत्मीय एव भ्रमः किं क्षयार्थः न स्यात् प्रत्यहं विप्रवृत्या जनाडम्बरः विवादात् वा तुलामानतः हाटके (न स्यात्) अपितु स्यात् ॥ १० ॥

अर्थः—यदि दसवें स्थान में शुक्र हो तो वंश को उत्पन्न करने वाले वीर्य को रोक देता है। उसका अपना भ्रम ही क्या अपना नाश करने वाला नहीं कोई होता ? ब्राह्मण वृत्ति अथवा वादविवाद से सौ पल सुवर्ण इकट्ठा नहीं करता अर्थात् करता है ॥ १० ॥

भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्ना-
त्सुरूपं महीपं च कुर्याच्च सम्यक् ।
लसत्कीर्ति सत्यानुरक्तं गुणाढ्यं
महाभोगमैश्वर्ययुक्तं सुशीलम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—यस्य लग्नात् लाभगः भृगुः (तस्य) लाभदः लस-

त्कीर्तिसत्यानुरक्तं गुणाढ्यं महाभागं ऐश्वर्ययुक्तं सुशीलं सुरूपं सम्यक् महीपं च कुर्यात् ॥ ११ ॥

अर्थः—जिसके जन्मलग्न से ग्यारहवें स्थान में शुक्र होता है उसे लाभ होता है। वह सुन्दर, सुशील, कीर्तिमान, सत्यप्रेमी, गुणवान, भाग्यवान्, धनवान् तथा राजा होता है ॥ ११ ॥

कदाप्येति वित्तं विलीयेत पित्तं
सितो द्वादशे केलिसत्कर्मशर्मा।
गुणानां च कीर्तेः क्षयं मित्रवैरं
जनानां विरोधं सदाऽसौ करोति ॥ १२ ॥

अन्वयः—यदि असौ सितः द्वादशे, कदा अपि वित्तं एति, विलीयेत पित्तं, केलिसत्कर्मशर्मा (भवति) गणानां कीर्तेः च क्षयं सदा मित्रवैरं जनानां विरोधं करोति ॥ १२ ॥

अर्थः—यदि बारहवें स्थान में शुक्र हो तो धन लक्ष्मी का आगमन होता है। पित्त शांत रहता है। क्रीडा तथा श्रेष्ठ कर्मों से वह प्रसन्न रहता है। गुण तथा कीर्ति का विनाश करता है। मित्र तथा अन्य लोगों से वैर करता है ॥ १२ ॥

इति शुक्रभावफलम्।

—: ० :—

अथ शनिफलम्।

घनेनाति पूर्णोऽतितृष्णो विवादी
तनुस्थेऽर्कजे स्थूलदृष्टिर्नरः स्यात्।
विषं दृष्टिजं त्वाधिकृत्व्याधिबाधः
स्वयं पीडितो मत्सरावेश एव ॥ १ ॥

अन्वयः—अर्कजे तनुस्थे नरः धनेन अतिपूर्णः, अतितृष्णः विवादी स्थूल दृष्टिजं विषं अधिकृत् व्याधिबाधः मत्सरावेश एव स्वयं पीडितः (स्यात्) ।। १ ।।

अर्थः—जिसके जन्मलग्न में शनि होता है वह पूर्ण सम्पत्तिशाली, लोलुप, शोक करने वाला तथा स्थूल दृष्टि वाला होता है। उसके नेत्र जैसे विष उत्पन्न कर अपने शत्रुओं का नाश कर देते हैं। उसका मन चिन्तित रहता है तथा वह स्वयं रुग्ण रहता है ।।१।।

सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुम्बात्
कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किन्न भुङ्क्ते ।
समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोऽपि
प्रसक्तिं विना लोहकः को लभेत् ।। २ ।।

अन्वयः—शनौ कुटुम्बे (सति) सुखापेक्षया कुटुम्बात् वर्जितः असौ किं किं वस्तु न भुङ्क्ते ? प्रसक्तिं विना वचः अपि वक्ति लोहकः कः लभेत् ।। २ ।।

अर्थः—जिसके दूसरे स्थान में शनि होता है वह सुख की इच्छा से कुटुम्ब त्याग कर विदेश में सुख भोगता है। अनुपयुक्त स्थलों पर भी मित्रों को कटुवचन कहा करता है। सिवा उसके अन्य कौन सुवर्ण आदि धातुओं का स्वामी हो सकता है ।। २ ।।

तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तं
जनादुद्यमाज्जायते युक्तभाषी ।
अविघ्नं भवेत् कर्हिचिन्नैव भाग्यं
दृढाशः सुखी दुर्मुखः सत्कृतोऽपि ।। ३ ।।

अन्वयः—शनौ तृतीये जनात् उद्यमात् चित्तं शीतलं न एव जायते, दृढाशः सुखी युक्तभाषी भाग्यं कर्हिचित् अविघ्नं न एवं

भवेत् (असौ) सत्कृतः अपि दुर्मुखः (भवति) ॥ ३ ॥

अर्थः—जिसके तीसरे स्थान में शनि होता है उसका मन भाइयों के रहने के कारण उद्योग से शीतल नहीं होता है। वह महत्वाकांक्षी तथा युक्तायुक्त भाषण करने वाला होता है। उसका भाग्य विघ्नों से भरा रहता है। सत्कार करने पर भी प्रसन्न नहीं होता ॥ ३ ॥

चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं
धनं मन्दिरं बन्धुवर्गापवादः।
पितुश्चापि मातुश्च सन्तापकारो
गृहे वाहने हानयो वातरोगो ॥ ४ ॥

अन्वयः—शनौ चतुर्थे पैतृकं मन्दिरं दूरं याति, बन्धुवर्गापवादः गृहे हानयः पितः मातुः च सन्तापकारी (भवति) वातरोगी (जायते) ॥ ४ ॥

अर्थः—जिसके चौथे स्थान में शनि होता है उसके पिता का धन तथा गृह छूट जाता है। उसे बन्धु-बान्धवों की ओर से कलंक लगता है। कुल की हानि होती है, वह माता-पिता को दुख देने वाला तथा सदैव वायु सम्बन्धी व्याधियों से ग्रसित रहता है ॥ ४ ॥

शनौ पंचमे च प्रजाहेतु दुःखो
विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्न शुद्धा।
रतिर्दैवते शब्दशास्त्रे च तद्वत्,
कलिर्मित्रतो मंत्रतः क्रोडपीडा ॥ ५ ॥

अन्वयः—पंचमे शनौ प्रजाहेतु दुःखी (स्यात्) तस्य विभूतिः चला बुद्धि च शुद्धा न (भवति) दैवते तद्वत् शब्दशास्त्रे च रतिः

न मित्रतः कलिः मंत्रतः क्रोडपीडा (संजायते) ।। ५ ।।

अर्थः—जिसके पाचवें स्थान में शनि होता है वह पुत्र आदि के न रहने से दुःखी होता है। उसकी सम्पत्ति तथा बुद्धि दोनों ही चंचल होती है। देवता तथा व्याकरण शास्त्र पर उसे श्रद्धा नहीं होती है। मित्र से वैर रखता है। मंत्र-जाप के कारण उदर पीड़ा से ग्रस्त रहता है ।। ५ ।।

अरेर्भूपतेश्चोरतो भीतयः किं
यदीनस्य पुत्रो भवेद्यस्य शत्रौ ।
न युद्धे भवेत्सम्मुखे तस्य योद्धा
महिष्यादिकं मातुलानां विनाशः ।। ६ ।।

अन्वयः—यस्य शत्रौ यदि इनस्य पुत्रः भवेत् अरेः भूपतेः चोरतः भीतयः किं ? तस्य सम्मुखे युद्धे योद्धा न भवेत्, महिष्यादिकं मातुलानां विनाशः (स्यात्) ।। ६ ।।

अर्थः—यदि छठें स्थान में शनि हो तो उसे चोरों से क्या भय ? युद्ध में उसके सम्मुख कोई योद्धा नहीं टिकता। उसे भैंस, गौ इत्यादि का सुख प्राप्त होता है। उसके मामा का नाश हो जाता है ।। ६ ।।

सुदारा न मित्रं चिरं चारु चित्तं
शनौ द्यूनगे दम्पती रोगयुक्तौ ।
अनुत्साहसन्तप्तकृद्धीनचेताः
कुतो वीर्यवान्विह्वलो लोलुप स्यात् ।। ७ ।।

अन्वयः—शनौ द्यूनगे सुदाराः मित्रं चारु वित्तं चिरं न (स्यात्) दम्पती रोगयुक्तौ (भवेताम्) अनुत्साहसन्तप्तकृत् हीनचेताः लोलुपः स्यात् वीर्यवान् कुतः (स्यात्) ।। ७ ।।

अर्थः—यदि सातवें स्थान में शनि हो तो धन तथा स्त्री और

मित्र उत्तम स्थाई नहीं होते हैं। स्त्री पुरुष दोनों हो रोगी होते हैं। वह पुरुष निरुत्साही होता है तथा संकीर्ण प्रवृत्ति का होता है। मन का दुर्बल तथा लोभी प्रकृति का होता है फिर पराक्रमी कैसे हो ? ॥ ७ ॥

वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां
विनाशो धनानां स का यस्य न स्यात्।
शनौ रंध्रगे व्याधितः क्षुद्रदर्शी
तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु ॥ ८ ॥

अन्वयः—शनौ रंध्रगे (सति) यस्य अनौपाधिकानां जनानां वियोगः न स्यात् धनानां विनाशः न स्यात् सः कः व्याधितः ? क्षुद्रदर्शी जनः तदग्रे किं कैतवं करोतु ? ॥ ८ ॥

अर्थः—जिसके आठवें स्थान में शनि हो ऐसा वह कौन है जिसका अकारण ही मित्र और भाई से वियोग न हो तथा धन का नाश न हो। ऐसा कौन है जो रोगी न हो। उसके सम्मुख क्षुद्रदर्शी जन क्या कुटिलता करेंगे ॥ ८ ॥

मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तं तु शीलं
रतिर्योगशास्त्रे गुणी राजसः स्यात्।
सुहृद्वर्गतो दुःखितो दीनबुद्धया
शनिर्धर्मगः कर्म कृत्संन्यसेद्वा ॥ ९ ॥

अन्वयः—धर्मगः शनिः तस्य मतिः तिक्ताः शीलं तु न तिक्तं योगशास्त्रे रतिः राजसः गुणः स्यात्, दीनबुद्धया सुहृद्गतिः दुखी (भवेत्) कर्मकृत् संन्यसेत् वा ॥ ९ ॥

अर्थः—जिसके नवें स्थान में शनि हों वह कठोर बुद्धिवाला होता है परन्तु मृदु स्वभाव का होता है। योगशास्त्र पर उसकी

श्रद्धा होती है। वह रजोगुणी होता है। क्षुद्र बुद्धि के कारण अपने मित्रों की ओर से दुःखित रहता है। वह या तो कर्म करता है अथवा संन्यासी हो जाता है ॥ ९ ॥

अजा तस्य माता पिता बाहुरेव
वृथा सर्वतो दुष्ट कर्म्माधिपत्यात् ।
शनैरेधते कर्मगे शर्म मन्दो
जयो विग्रहे जीविकानां तु यस्य ॥ १० ॥

अन्वयः—यस्य मन्दः कर्मगः तस्य अजा माता, पिता बाहुरेव (स्यात्) आधिपत्यात् एव सर्वतः दुष्ट कर्म (आचरेत्) शनैः एधते विग्रहे जयः (स्यात्) जीविकानां तु (अति अल्पता) भवेत् ॥ १० ॥

अर्थः—जिसके दसवें स्थान में शनि होता है उसके माता-पिता दोनों की मृत्यु बाल्यकाल ही में हो जाती है। उसका बकरी के दूध से पालन होता है। अधिकार के घमण्ड में नीच कर्म में प्रवृत्त होता है। उसका सुख शनैः शनैः बढ़ता है। युद्ध में विजय-श्री मिलती है। जीविका अल्प होती है ॥ १० ॥

शनौ व्योमगे विन्दते किञ्च माता
सुखं शैशवं दृश्यते किन्तु पित्रा ।
निधिः स्थापितो वापितो वा कृषिश्च
प्रणश्येद् ध्रुवं दृश्यतो दैवतो वा ॥ ११ ॥

अन्वयः—व्योमगे शनौ माता किंच सुखं बिन्दते, पित्रा किं शैशवं दृश्यते स्थापितः निधिः बापितः किन्तु कृषिः च दृश्यतः वा दैवतः ध्रुवं प्रणश्येत् ॥ ११ ॥

अर्थः—जिसके दसवें स्थान में शनि होता है उसकी माता कौन

सा सुख पाती है ? उसका पिता उसे क्या बाल्यावस्था में देख पाता है ? अर्थात् दोनों की मृत्यु बाल्यावस्था में हो जाती है। पैतृक सम्पत्ति या कृषि अप्रत्याशित आपत्ति से नष्ट हो जाती है ॥ ११ ॥

स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च
स्थिरा नैव रोगादयो न स्थिराणि।
अपत्यानि शूरः शतादेक एव
प्रपंचाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥१२॥

अन्वयः—भानुपुत्रे लाभगे वित्तं स्थिरं, आयुः मानसं च रोगादयः स्थिरा न एव अपत्यानि स्थिराणि न, शतात् प्रपंचाधिकः एक एव शूरः (भवेत्) ॥ १२ ॥

अर्थः—जिसके ग्यारहवें स्थान में शनि होता है वह स्थिर धन वाला होता है। आयु तथा मन भी स्थिर रहता है। रोगादिक व्याधियाँ स्थिर नहीं रहतीं। संतानें भी अस्थिर ही होती हैं। वह बड़ा प्रपंची होता है तथा उत्कट वीर होता है ॥ १२ ॥

व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्या–
दशूरोऽथवा निस्त्रपो मन्दनेत्रः।
प्रसन्नो बहिर्नो गृहं लग्नपश्च,
व्ययस्थो रिपुध्वंसकृद्यज्ञभोक्ता ॥१३॥

अन्वयः—सूर्यसूनौ व्ययस्थे नरः अशूरः अथवा निस्त्रपः मन्दनेत्रः (स्यात्) बहिः नो गृहं (स्यात्) यदा लग्नपः व्ययस्थः (तदा नरः) रिपुध्वंसकृत् यज्ञभोक्ता च (स्यात्) ॥१३॥

अर्थः—जिसके बारहवें स्थान में शनि होता है वह निर्लज्ज तथा छोटी आँखों वाला होता है। वह विदेश-यात्रा में प्रसन्न रहता है। यदि शनि लग्नेश होकर बारहवें स्थान में हो तो वह

शत्रुओं का नाश करने वाला तथा यज्ञफल का भोग करने वाला होता है ॥ १३ ॥

इति शनिभावफलम्

अथ राहुफलम्

स्ववाक्येऽसमर्थः परेषां प्रतापात्
प्रभावात्समाच्छादयेत्स्वान्परार्थान् ।
तमो यस्य लग्ने स भग्नारिवीर्यः
कलत्रेऽधृतिं भूरिदारोऽपि यायात् ॥१॥

अन्वयः—(यस्य) लग्ने तमः सः भग्नारिवीर्यः (स्यात्) परेषां प्रतापात् स्ववाक्ये असमर्थः (स्यात्) प्रभावात् स्वान् परार्थान् समाच्छादयेत् भूरिदारः अपि कलत्रे अधृतिं यायात् ॥१॥

अर्थः—जिसके जन्म लग्न में राहु होता है वह शत्रु बलका विनाश करने वाला होता है। दूसरों के प्रभाव में आकर अपनी नीति पालन में असमर्थ होता है। अन्य से प्रभावित हो अपने तथा अन्य के कार्यों को करता है। अनेक स्त्रियों के होने पर भी संसार से विरक्त रहता है ॥ १ ॥

कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं
मृषाभाषिता निर्भयो वित्तपालः ।
स्ववर्ग प्रणाशो भयं शस्त्रतश्च
अवश्यं खलेभ्यो लभेत्पारवश्यम् ॥२॥

अन्वयः—(चेत्) तमः कुटुम्बे (भवति तर्हि) कुटुम्बं नष्टभूतम् (तस्य) मृषाषिता (भवेत् सः) निर्भयो वित्तपालः स्ववर्ग-

प्रणाशः स्यात् तस्य शस्त्रतः भयं (स्यात्) अवश्यं खलेभ्यः पारवश्यं लभेत् ॥ २ ॥

अर्थः—दूसरे स्थान में यदि राहु हो तो उसका कुटुम्ब नष्ट हो जाता है। वह मिथ्यावादी होता है तथा निर्भय होता है। धन की रक्षा तथा शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है। उसे शस्त्र से भय होता है तथा दुष्ट के वश में रहता है ॥ २ ॥

न नागोऽथ सिंहो भुजो विक्रमेण
प्रयातीह सिंहीसुते तत्समत्वम् ।
तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति
प्रयातोऽपि भाग्यं कुतो यत्नहेतुः ॥३॥

अन्वयः—इह तृतीये सिंहीसुते नागः अथ सिंहः भुजो विक्रमेण तत्समत्वं न प्रयाति यस्य जगत् सोदरत्वं समेति भाग्यं प्रयातः अपि कुत्तो यत्न हेतुः ॥ ३ ॥

अर्थः—जिसके तीसरे स्थान में राहु हो तो हाथी अथवा सिंह के समान वह पराक्रमी होता है। समस्त जगत् भ्रातृ सम हो जाता है। भाग्य उदय होने पर भी उसे कौन फल मिलता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे कथं मातृनैरुज्य देहो
हृदिज्वालया शीतलं किं बहिः स्यात् ।
स चेदन्यथा मेषगो कर्कगो वा
बुधर्क्षेऽसुरो भूपतेर्बन्धुरेव ॥ ४ ॥

अन्वयः—चेत् असुरः चतुर्थे (तदा) मातृनैरुज्यदेहः कथं, हृदि ज्वालया बहिः शीतलं किं स्यात्, मेषगः कर्कगः वा बुधर्क्षे (गतः) सः अन्यथा भूपते बन्धु एव (भवति) ॥ ४ ॥

अर्थः—जिसके चौथे स्थान में राहु हो तो उसकी माता का

शरीर निरोग कैसे हो ? यदि मेष, कर्क, कन्या तथा मिथुन रामि में राहु हो तो शुभ फल देता है। वह पुरुष राजा हो जाता है ॥ ४ ॥

सुते तत्सुतोत्पत्तिकृत्सिंहिकायाः
सुतो भामिनीचिन्तया चित्ततापः ।
सति क्रोडरोगे मिमाहारहेतुः
प्रपंचेन किं प्रापकं दुस्तवर्ज्यम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—सिंहिकायाः सुतः सुते सुतोत्पत्तिकृत्, भामिनीचिन्तया चित्ततापः (स्यात्) क्रोडरोगे सति आहारहेतुः किम् ? प्रपंचेन प्रापकं दुस्टवर्ज्यं किम् ? ॥ ५ ॥

अर्थ—जिसके पाँचवें स्थान में राहु होता है तो उसे पुत्र उत्पन्न होता है। वह सदैव ही स्त्री की चिन्ता से चिन्तित रहता है। उदर-रोग से व्यथित होने पर भोजन का क्या उपाय है। प्रारब्ध के सिवा और सभी उपाय व्यर्थ होते हैं ॥ ५ ॥

बलं बुद्धिवीर्यं धनं तद्वशेन
स्थितो वैरिभावेऽपि येषां जनानाम् ।
रिपूणामरण्यं दहेदेव राहुः
स्थिरं मानसः तत्तुला नो पृथिव्याम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—येषां जनानां वैरिभावे राहुः स्थितः स तेषां रिपूणां अरण्यं यदि दहेत् एव तद्वशेन बलं बुद्धिवीर्यं धनं स्थिरसानसं (च स्यात्) पृथिव्यां तत्तुला नो अस्ति ॥ ६ ॥

अर्थः—जिसके छठवें स्थान में राहु होता है वह उनके शत्रु को नष्ट कर देता है। उनको बल-वीर्य, धन होता है तथा वे स्थिरचित्त के होते हैं। पृथ्वी में उनके समान कोई नहीं होता है ॥ ६ ॥

विनाशं लभेयुर्द्युने तद्युवत्यो
रुजा धातुपाकादिना चन्द्रमर्दी ।
कटाहे यथा लोडयेज्जातवेदाः
वियोगापवादाः शर्म न प्रयान्ति ।। ७ ।।

अन्वयः—चन्द्रमर्दी द्युने तद्युवत्यः धातुं लोडयन्ति पाकादिना रुजा विनाशं लभेयुः जातवेदा यथा कटाहे तथा नरः लोडयते वियोगापवादाः शमं न प्रयान्ति ।। ७ ।।

अर्थः—यदि सातवें स्थान में राहु हो तो ऐसे पुरुष की स्त्रियाँ धातुपाक आदि व्याधियों से नष्ट हो जाती हैं । वह अग्नि के समान संतप्त रहता है । उसका वियोग काल तथा उसकी लोक-निन्दा शान्त नहीं होती ।। ७ ।।

नृपः पण्डितैर्वन्दितैर्निन्दितः स्वैः
सकृद्भाग्यलाभोऽसकृद् भ्रंश एव ।
धनं जातकं तं जनाश्च त्यजन्ति
श्रमग्रन्थिकृद्रन्ध्रगो ब्रध्नशत्रुः ।। ८ ।।

अन्वयः—रंध्रगः ब्रध्नशत्रुः समग्रन्थिकृत् (जायते) तं जातकं धनं जनाः च त्यजन्ति (सः) नृपैः पण्डितैः (च) वदितैः स्वैः (निन्दितः) भाग्यलाभः सकृत् भ्रंश एव (स्यात्) ।।

अर्थः—जिसके आठवें स्थान में राहु होता है उसे श्रम के कारण उदर में वायु गोला या रक्तगुल्म आदि व्याधियाँ हो जाती हैं । वह पैत्रिक सम्पत्ति से वंचित रहता है तथा कुटुम्बियों द्वारा त्याग दिया जाता है । पण्डित और राजा उसकी वन्दना करते हैं किन्तु वह अपने जाति तथा कुटुम्ब द्वारा निन्दित होता है ।। ८ ।।

मनीषी कृतं न त्यजेद् बन्धुवर्गं
सदा पालयेत्पूजितः स्याद् गुणै स्वैः ।

सभाद्योतको यस्य चेत्त्रित्रिकोणे
तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ॥ ९ ॥

अन्वयः—यस्य त्रित्रिकोणे तमः चेत् मनीषी, स्वैः गुणैः पूजितः सभाद्योतकः कौतुकी देवतीर्थे, दयालुः स्यात् कृतं न त्यजेत् सदा वन्धुवर्गं पालयेत् ॥ ९ ॥

अर्थः—जिसके नवें स्थान में राहु होता है वह अपने सद्गुणों से सभा को लुब्ध करने वाला, तीर्थ-प्रेमी तथा दयालु होता है। वह परोपकार को विस्मृत नहीं करता तथा अपने कुटुम्ब का लालन-पालन करता है ॥ ९ ॥

सदा म्लेच्छसंसर्गतोऽतीव गर्वं
लभेन्मानिनी कामिनी भोगमुच्चः ।
जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नाधिशेते
मदार्थव्ययो क्रूरकर्मा खगेऽगौ ॥ १० ॥

अन्वयः—अगौ खगे (स्थिते) मदार्थव्ययो क्रूरकर्मा असौ जनैः व्याकुलः (सन्) सुखं न अधिशेते सदाम्लेच्छसंसर्गतः अतीव गर्वं (लभते) मानिनी कामिनी भोगं उच्चैः लभते ॥ १० ॥

अर्थः—जिसके दसवें स्थान में राहु होता है वह मद्यादि में धन व्यय करने वाला तथा क्रूरकर्म करने वाला होता है। लोगों की निन्दा से वह सुखी नहीं हो पाता। सदैव म्लेछों के संसर्ग में रहने के कारण वह बड़ा ही घमण्डी होता है। वह सुन्दर स्त्रियों का भोग करता है ॥ १० ॥

सदा म्लेच्छतोऽर्थं लभेत्साभिमान-
श्चरेत् किङ्करेण व्रजेत् किं विदेशम् ।

परार्थाननर्थी हरेद् धूर्तबन्धुः
सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत् ॥ ११ ॥

अन्वयः—(यदि) तमः लाभगः (तर्हि) म्लेच्छतः अर्थं लभेत् साभिमानः किंकरेण चरेत् विदेशे किं व्रजेत् धूर्तबन्धुः अनर्थी परार्थान् हरेत् सुतोत्पत्तिसौख्यं च प्राप्नुयात् ॥ ११ ॥

अर्थः—यदि राहु ग्यारहवें स्थान में हो तो उस पुरुष को सदैव ही म्लेच्छों से धन की प्राप्ति होती है। वह नौकरों के साथ विचरण करता है, विदेश नहीं जाता। वह धूर्तों का मित्र तथा परिजनों का धन लेने वाला होता है। पुत्रों का सुख उसे प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

तमो द्वादशे दीनतां पार्श्वशूलं
प्रयत्ने कृतेऽनर्थतामातनोति ।
खलैर्मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं
विरामे मनो वांछितार्थस्य सिद्धिम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—द्वादशे तमः दीनतां, पार्श्वशूलं प्रयत्ने कृते अपि अनर्थतां खलैः मित्रतां, साधुलोके रिपुत्वं विरामे मनः वांछितार्थस्यः सिद्धि (च) आतनोति ॥ १२ ॥

अर्थः—बारवें स्थान में यदि राहु हो तो दीनता, पसुली में पीड़ा देता है। उद्योग करने पर भी कार्य सिद्ध नही होता। दुष्टों से मित्रता होती है। सज्जनों से विरोध बढ़ता है। मन में सन्तोष तथा मनोकामना सफल होती है ॥ १२ ॥

इति राहुभावफलम्

—: ० :—

अथ केतुभावफलम्

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्त्ता
तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम्।
कलत्रादि चिन्ता सदोद्वेगता च
शरीरे व्यथा नैकधा मारुती स्यात् ॥१॥

अन्वयः—तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्त्ता जायते तथा दुर्जनेभ्यः भयः व्याकुलत्वं कलत्रादि चिन्ता सदा उद्वेगता च शरीरे नैकधा मारुतो व्यथा स्यात् ॥ १ ॥

अर्थः—जिसके जन्म लग्न में केतु हो वह स्वबन्धुओं को कष्टदायक होता है। दुर्जनों से भयभीत रहता है, मन अशान्त रहता है, सदैव व्यथित रहता है, तथा शरीर में वायु सम्बन्धी अनेकों प्रकार की व्याधियाँ लगी रहती हैं ॥ १ ॥

धने केतुरव्यग्रता किं नरेशा-
ज्जने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च।
कुटुम्बाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा
भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥२॥

अन्वयः—धने केतुः मुखे रोगकृत् जने नरेशात् अव्यग्रता धान्य-नाशः कुटुम्बात् विरोधः भवेत् वचः सत्कृतं वा किम्? स्व गृहे सौम्य-गेहे अति सौख्यं (भवेत्) ॥ २ ॥

अर्थः—यदि दूसरे स्थान में केतु हो तो मुख रोग होता है तथा राजा से विरोध उत्पन्न होता है। सम्पत्ति का नाश होता है तथा अपने कुटुम्ब से भी विरोध उत्पन्न होता है। उसका आदर कोई नहीं करता। परन्तु यदि मेष, मिथुन, या कन्या राशि पर केतु हो तो अत्यन्त सुखी होता है ॥ २ ॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं
घनं भोगमैश्वर्यं तेजोऽधिकञ्च ।
सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडां
भयोद्वेगचिन्ताकुलत्वं विधत्ते ॥३॥

अन्वयः—शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं घनं, भोगं, ऐश्वर्यं, अधिकं च तेजः सुहृदवर्गनाशं, सदा बाहु पीडा भयोद्वेग चिन्ताकुलत्वं विधत्ते ॥ ३ ॥

अर्थः—यदि तीसरे स्थान में केतु हो तो शत्रुओं का विनाश, विवाद, धन भोग-ऐश्वर्य, ओज की अधिकता, मित्रों का ह्रास, भुजा का सदैव पीड़ित रहना, भय तथा घबराहट और चिन्ता से वह मनुष्य व्यस्त रहता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचि-
त्सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति ।
शिखी बन्धुवर्गात् सुखं स्वोच्चगेहे
चिरन्नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥४॥

अन्वयः—शिखी चतुर्थे मातुः सुहृदवर्गतः च सुखं कदाचित् नो एति। पैतृकं नाशं एति, स्वे गृहे चिरं नो वसेत्। व्यग्रता बन्धुवर्गात् सुखं (एति) ॥ ४ ॥

अर्थः—यदि चौथे स्थान में केतु होता है तो वह पुरुष माता और मित्र के सुख से वंचित रहता है। उसकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। अपने घर में वह अधिक दिनों तक नहीं रह पाता। वह सदैव व्यग्र रहता है। यदि केतु अपने उच्च स्थान का हो तो बन्धु-बान्धव सुखी रहते हैं ॥ ४ ॥

यदा पंचमे राहु पुच्छं प्रयाति
तदा सोदरे घातवातादि कष्टम् ।
स्वबुद्धिव्यथा सन्ततः स्वल्पपुत्रः
स दासो भवेद्वीर्ययुक्तो नरोऽपि ॥ ५ ॥

अन्वयः—यदा राहुपुच्छं पंचमे प्रयाति तदा सोदरे घातः वातादिकष्टं स्वबुद्धिव्यथा सन्ततः स्वल्पपुत्रः भवेत् वीर्ययुक्तः अपि सः नरः दासः भवेत् ॥ ५ ॥

अर्थः—पंचम स्थान में केतु हो तो उस पुरुष के सहोदर का घात अथवा वायु रोग से व्यथित रहते हैं। स्वयं अपनी बुद्धि से वह कष्ट पाता है। उसे अधिक पुत्र नहीं होते। वह पराक्रमी होने पर भी दूसरों का दास बना रहता है ॥ ५ ॥

तमः षष्ठभागे गते षष्ठभावे
भवेन्मातुलान्मानभङ्गो रिपूणाम् ।
विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं
शरीरे सदाऽनामयं व्याधिनाशः ॥६॥

अन्वयः—तमः षष्ठभागे षष्ठभावे गते मातुलात् मानभङ्गः रिपूणां विनाशः चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं शरीरे सदा अनामयं व्याधिनाशः भवेत् ॥ ६ ॥

अर्थः—जिसके छठवें स्थान में केतु होता है उसके मामा से मान-हानि होती है। गौ आदि पशुओं का सुख मिलता है। वह मन का अति संकीर्ण होता है। शरीर निरोग रहता है। व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं ॥ ६ ॥

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता
निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतिः ।

भवेत्कीटगः सर्वदा लाभकारी
कलत्रादिपीड़ा व्ययो व्यग्रता चेत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—चेत् शिखी सप्तमे मार्गचिन्ता भूयसी भवेत् निवृत्तः स्वनाशः अथवा वारिभीतिः भवेत् कलत्रादि पीड़ा व्ययः व्यग्रता भवेत् कीटगः लाभकारी भवेत् ॥ ७ ॥

अर्थः—जिसके सातवें स्थान में केतु रहे उसे मार्ग की चिन्ता अधिक व्यापती है। उसके सम्पत्ति का विनाश होता है या जल से भय होता है। उसके स्त्री-पुत्रादि पीड़ित रहते हैं। उसका मन सदैव अशांत बना रहता है। सातवें स्थान में केतु वृश्चिक राशि का हो तो सदैव लाभकारी होता है ॥ ७ ॥

गुदं पीड्यतेऽर्शादिरोगैरवश्यं
भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः।
भवेदष्टमे राहु पुच्छेऽर्थ लाभः
सदा कीटकन्याजगे युग्मगे तु ॥ ८ ॥

अन्वयः—राहु पुच्छे अष्टमे गुदं अर्शादिरोगैः अवश्यं पीड्यते वाहनादेः भयं द्रव्यस्य रोधः भवेत् कीटकन्याजगो युग्मगे तु सदा अर्थलाभः (स्यात्) ॥ ८ ॥

अर्थः—जिसके आठवें स्थान में केतु हो वह पुरुष बवासीर आदि रोगों से व्यथित रहता है। उसे घोड़े आदि से गिरने का भय रहता है। धन की कमी रहती है। किन्तु यदि आठवें स्थान का केतु, वृश्चिक, कन्या, मेष राशि पर हो तो सम्पत्ति बढ़ती है ॥ ८ ॥

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः
सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः।

सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते
तपोदानतो हास्यवृद्धिं तदानीम् ॥९॥

अन्वयः—यदा धर्मभावे शिखी (तदा) क्लेशनाशकः भवेत् सुतार्थी भवेत् म्लेच्छतः भाग्यवृद्धिः सहोत्थव्यथां वाहुरोगं तदानीं तपोदानतः हास्यवृद्धि च विधत्ते ॥९॥

अर्थः—जिसके नवें स्थान में केतु होता है उसका दुख दूर हो जाता है । वह पुत्र की इच्छा करता है तथा म्लेच्छों के संसर्ग से उसके भाग्य में अभिवृद्धि होती है । उसे अपने महोदरों से भय रहता है । तपस्या और दान को ले लोग उसकी हँसी करते हैं ॥९॥

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतु-
र्यदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति ।
सदा वाहने पीडितं जातु जन्म,
वृषाजालिकन्यासु चेच्छत्रुनाशम् ॥१०॥

अन्वयः—यदा यस्य कर्मगः केतुः तदा दुर्भगः कष्टभाजं (च) करोति पितुः सुखं न करोति वाहने पीडितं करोति जातु-चेत् जन्म वृषाजालिकन्यासु शत्रुनाशं करोति ॥१०॥

अर्थः—जिसके दसवें स्थान में केतु होता है वह अभाग्य-वान् तथा कष्टमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है । उसे पितृसुख अप्राप्य होता है । उसे अश्वादि से गिरकर पीड़ित होना पड़ता है । यदि उसका जन्म वृष, मेष, वृश्चिक तथा कन्या राशि में गये हुए केतु में हो तो उसके शत्रु का विनाश होता है ॥ १० ॥

सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः
सुगात्रः सुवस्त्रः सुतेजाश्च यस्य ।

दरे पीड्यते संततिदुर्भगा च,

शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति । ११ ।

अन्वयः—लाभगः शिखी सर्वलाभं करोति सुभाग्यः सुविद्याधिकः सुगात्रः सुवस्त्र सुतेजाः तस्य संततिः दुर्भगा (भूत्वा) दरे पीड्यते ॥ ११ ॥

अर्थः—ग्यारहवें स्थान का केतु सभी प्रकार के लाभ को देने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान्, विद्वान्, उत्तम वस्त्रों वाला तथा अत्यन्त ओजस्वी होता है। उसके सन्तान अभागे होते हैं। वह उदर रोग से पीड़ित रहता है ॥ ११ ॥

शिखी रिष्फगो वस्तिगुह्यांघ्रिनेत्रे

रुजा पीडनं मातुलान्नैव शर्म ।

सदा राजतुल्यं नरं सद्व्ययं त

द्रिपूणां विनाशं रणेऽसौ करोति ॥ १२ ॥

अन्वयः—असौ रिष्फगः शिखी नरं सदा राज्यतुल्यं सद्व्ययं रणे तद्रिपूणां विनाशं वस्तिगुह्यांघ्रिनेत्र रुजा पीडनं करोति मातुलात् शर्म नैव करोति ॥ १२ ॥

अर्थः—जिसके बारहवें स्थान में केतु हो वह पुरुष राजा के समान हो जाता है। श्रेष्ठकर्मों में उसके धन का व्यय होता है। युद्ध में शत्रुओं का विनाश होता है। वस्ति, गुप्तेन्द्रिय, तथा नेत्रों की व्याधियों से पीड़ित रहता है। अपने मामा की ओर से वह सुखी नहीं होता ॥ १२ ॥

॥ इति केतुभाव फलम् ॥

चमत्कारचिन्तामणौ यत्खगानां,
फलं कीर्त्तितं महानारायणेन ।
पठेद्यो द्विजस्तस्य राज्ञां समक्षे,
प्रवक्तुं न चान्ये समर्था भवेयुः ॥

अन्वयः—महानारायणेन चमत्कारचिन्तामणौ खगानां यत् फलम् कीर्त्तितं तत् यः द्विजः राजा (पुरतः) पठेत् तस्य समक्षे अन्ये क प्रवक्तुं न समर्था भवेयुः ॥

अर्थः—महनारायण ने चमत्कारचिन्तामणि में ग्रहों का जो फल लिखा है उसे जो ब्राह्मण राजाओं के सम्मख पढ़ता है उसके आगे दूसरा कोई बोल नहीं सकता ।

॥ इति सान्वय भाषानुवाद सहित चमत्कारचिन्तामणिः ॥

जन्मपत्र बनाने और देखने की विधि

इष्टकाल बनाने की विधि—इष्टकाल हमेशा सूर्योदय से लिया जाता है। सूर्योदय के बाद बारह बजे के अन्दर जन्म हो तो जन्म के घन्टा मिनट में सूर्योदय का घन्टा मिनट घटाकर उसे ढाई गुना कर देने से इष्टकाल हो जाता है। यदि बारह बजे के बाद का जन्म हो तो जन्म के घन्टा मिनट में १२ घंटा और जोड़कर सूर्योदय के घन्टा मिनट को उसमें घटाकर ढाई गुना कर देने से इष्टकाल हो जाता है। इसी प्रकार रात में सूर्यास्त का घन्टा मिनट क्रम से घटाकर उसे ढाई गुना करके उसमें दिनमान जोड़ देने से इष्टकाल हो हो जाता है।

जैसे किसी का जन्म संवत् २०११ वैशाख शुक्ल ८ सोमवार दिन में १० बजकर १५ मिनट पर हुआ। उस दिन सूर्योदय ५ बजकर २६ मिनट पर हुआ है। इसलिए दोनों का अन्तर ४।४९ हुआ इसका ढाई गुना १२।२।३० दंडफलात्मक इष्टकाल हुआ।

स्पष्ट ग्रह साधन—

पंचांग में अपने जन्म दिन के इष्टकाल से आगे की पंक्ति में ग्रह रखे हों तो उस पंक्ति के वारादि इष्टकाल में अपने वारादि जन्मेष्ट को घटा दे शेष ऋण चालन होगा और अपने इष्टकाल से पीछे को पंक्तिस्थ ग्रह हों तो अपने इष्टकाल में ही पंक्तिस्थ इष्टकाल को घटा दे तो वह धन चालन होता है। इस चालन से पंक्तिस्थ ग्रह की गति को गुणाकर ६० का भाग दें तो लब्धि इष्ट कालिक ग्रह हो जाते हैं।

जैसे पंक्तिस्थ इष्टकाल वारादि—२।४७।४३

स्वेष्टकाल वारादि २।१२।२

दोनों अन्तर का संचालन = ०।३५।४१ हुआ

रविगति—५७।४५
०।०
३४।१९९५ । १५७५
६५ २३३७१।८४१
२०६० ३०।
२० ३९४९

चालन से गुणाकर ६० से भाग देने से ०।३४।२५ अंश कला विकला मिला इसको पंक्तिस्थ सूर्य के राश्यादि में घटाने से
०।२६।२१।५५
०।३४।२०
०।२५।४७।३५ स्पष्ट सूर्य हुआ । इसी प्रकार से शेष ग्रहों को भी स्पष्ट करना चाहिए ।

पंक्तिस्थ ग्रह

स्प.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
०	८	१	२	१	६	८	२
२६	११	२	४	२२	११	२६	२६
२१	३५	१	०	३०	४७	४४	४४
५५	६	६	५०	२८	२८	१०	०
५७	७	११०	१२	७२	४	३	३
४७	२२	५४	२१	३८	३२व	११	११

स्पष्ट लग्न का साधन ।

सूर्य में अयनांश जोड़कर उसके भोग्यांश से सूर्य के पलात्मक राश्युदयमान को गुण देवे । गुणनफल में ३० का भाग दे जो लब्धि हो उसको इष्टकाल पला बनाकर उसमें घटा देवे । शेष में जितने

राश्युदय (गुणे हुए राश्युदय के आगे के) घट सकें उतने को घटा देवे जो न घटे वह अशुद्ध राशि होती है और आखिरमें घटी हुई राशि शुद्ध संज्ञक होती है। घटे हुए शेष को ३० से गुणा कर गुणनफल में पलात्मक अशुद्ध राशि के मान से भाग देकर जो अंश कला विकलात्मक लब्धि मिले उसमें शुद्ध राशि संख्या को जोड़कर उसमें अयनांश को घटा दे तो वही स्पष्ट लग्न होती है। जैसे यहाँ पर अयनांश २१।४९।३० को स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से २।१७।३७।५ हुआ इसका भोग्यांस १२।२६।५५ हुआ इससे वृष को पलात्मक मान २५३ को गुणा कर ३० से भाग देने से लब्धि १०४।२५।१५ हुई। इसे पलात्मक इष्टकाल ७२२।३० में से घटा दिया तो शेष ६१८।४।४५ हुआ। इसमें अग्रिम ाशि मिथुन का पलात्मक मान ३०४ घटा दिया तो शेष ३१४।४।४५ बचा। इसमें कर्क का पलात्मक मान ३४२ नहीं घट रहा है इसलिए यह अशुद्ध हुआ। इस शेष को ३० से गुणा कर दिया तो गुणन फल ९४२२।२२।३० हुआ इसमें अशुद्ध राश्युदय मान ३३२ से भाग दिया तो लब्धि २७।३३।२ अंश कला विकला हुई. इसमें शुद्ध राशि की संख्या ३ जोड़कर अयनांश घटा देने से राश्यादि ३।५।४३।३२ स्पष्ट लग्न हुई। विशेष जानकारी के लिये मेरी टीका की हुई नीलकंठी को देखिये।

अयनांश बनाने का नियम

जन्म के शाका में ४२१ घटाकर शेष को दो जगह रख दे। एक जगह ४० से भाग दे और लब्धि को दूसरे स्थान में रखे हुए शेष में घटाकर ६० से भाग दे तो अंश कला विकला अयनांश होता है।

स्पष्ट चन्द्र और भयात भभोग का साधन

जिस नक्षत्र में जन्म हुआ है उसके पहले के नक्षत्र के घटीपल

को ६० में घटाकर शेष इष्टकाल जोड़ में देने से घटी और पलात्मक भयात होता है पुनः उसी ६० में घटाये हुए शेष में जन्म नक्षत्र के घड़ीपल को जोड़ देने से घट्यादिक भभोग होता है ।

अथ चन्द्र साधन–घट्यादि ।

भयात का पला बनाकर उसे ६० से गुणाकर भभोग का पला बनाकर उसमें भाग देकर तीन स्थान तक लब्धि लावे फिर इस लब्धि में गत नक्षत्र की अश्विनी से गिनने से जो संख्या हो उसे ६० से गुणाकर उसमें जोड़ देवे । योगफल को २ से गुणाकर उसमें ९ का भाग देने से अंश कला विकलात्मक स्पष्ट चन्द्रमा होता है । अंश में ३० का भाग देने से लब्धि राशि और शेष अंश हो जाता है ।

जैसे जन्म नक्षत्र श्लेषा १६।९ है इसके पूर्व का नक्षत्र पुष्य १४।१५ है इसे ६० में घटाकर शेष में इष्टकाल जोड़ देने से ५७।४६ भयात हुआ और पुनः उस शेष में जन्म नक्षत्र की घटी में जोड़ देने से ६१।५३ यह भभोग हुआ ।

भयात को पल बना कर उसे ६० से गुण देने से २०७९६० हुआ इसमें पलात्मक भभोग ३७१३ का भाग देने से ५६।०।३१ लब्धि हुई इसमें जन्म नक्षत्र संख्या ८ को ६० से गुणाकर जोड़ दिया ५३६।०।३१ हुआ इसे २ से गुणाकर ९ का भाग देने से अंशादि ११९।१३।४७ प्राप्त हुआ । अंश में ३० का भाग देने से ३।२९।६।४७ यह राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा हुआ । प्रथम बारह कोष्ट का चक्र खींच कर प्रथम स्थान में लग्न को रख कर क्रम से सभी स्थानों में अंकों को लिखकर जिस राशि में जो ग्रह हो उसे उसी राशि में लिख देवे तो जन्म का चक्र बन जाता है ।

जन्माङ्ग
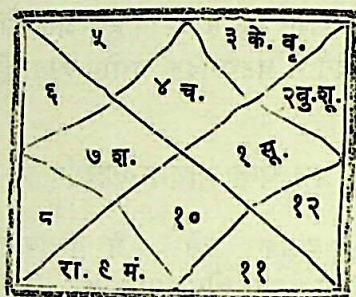
उपर्युक्त जन्माङ्ग में जन्मलग्न कर्क राशि है यही तनुभाव है। इसमें चन्द्रमा है इसलिए जन्माङ्ग वाले को चन्द्रमा के प्रथम भाव का फल होगा। इसी प्रकार मंगल और राहु का छठें भाव का शनि का फल चौथे भाव का सूर्य का दशम भाव का बुध और शुक्र का ग्यारहें भाव का और केतु तथा गुरु का बारहवें भाव का फल होगा। इसी प्रकार अन्य सभी कुण्डलियों में फल लिखना और देखना चाहिये।

॥ इति शुभम् ॥

भारत प्रेस, कचौड़ीगली, वाराणसी।